thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 15 जून 2014 आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र सप्ताह रविवार 15 जून 2014 से 21 जून 2014

आ.कृ. 03 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 112, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

शैक्षिक गुणवत्ता के साथ वैदिक आध्यात्मिकता का प्रशिक्षण भी ले रहे हैं प्राचार्य

डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के 'सैन्टर फॉर एजूकेशनल एक्सलेंस' के तत्त्वावधान में आजकल नव–नियुक्त प्राचार्यों का एक दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर हंसराज कॉलेज, दिल्ली के परिसर में चल रहा है, जिसमें देश के बारह राज्यों से आए लगभग पचास प्राचार्य प्रशासन, एकाउंटिंग, सूचना–प्रौद्योगिकी, ऑडिट,निर्माण और शैक्षिक गुणवत्ता को लेकर एक सघन प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। समिति के प्रधान श्री पूनम सूरी की सोच और दूरदृष्टि के चलते इस प्रशिक्षण के साथ–साथ इन प्राचार्यों को प्रतिदिन प्रातः एक घंटे का यज्ञ प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है जिसमें यज्ञ की भावना, उसकी प्रक्रिया और छिपे हुए अर्थों को व्याख्यायित कर प्राचार्यों को डी.ए.वी. की सच्ची अवधारणा से अवगत कराया जा रहा है। प्रशिक्षण में भाग ले रहे प्राचार्यों से बातचीत करने पर उनमें प्रशिक्षण के इस आध्यात्मिक पक्ष की ओर विशेष उत्साह पाया गया।

दस दिन का यज्ञ प्रशिक्षण दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी के ब्रह्मत्व में संपन्न किया जा रहा है।

प्रधान श्री पूनम सूरी जी का विकासपुरी में हुआ भावभरा अभिनन्दन

शिक्षा में वैदिक विचार धारा एवं मूल्यों के प्रमुख पक्षधर, पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान के समन्वित आलोक के प्रबल समर्थक तथा राष्ट्रवादी चिन्तक तथा आर्यसमाज एवं डी.ए.वी. संस्थाओं के यशस्वी प्रधान 'श्रीमान पूनम सूरी जी' का विकासपुरी स्थित वेदव्यास डी.ए.वी. विद्यालय द्वारा आयोजित आध्यात्मिक सम्मेलन में आगमन और इस अवसर पर उनका *''शिक्षक एवं आचार्य का व्यक्तित्व तथा बदलते हुए परिवेश में उसकी भूमिका''* नामक विषय पर दिया गया उद्बोधन बेहद प्रेरणायुक्त एवं मर्म स्पर्शी था। उन्होंने कहा शिक्षक भाग्य का भगवान और युग का शिल्पी होता है वह अपनी कुशल प्रतिभा एवं तीक्ष्ण मेधा से अनघढ़ पाषाण खण्डों एवं चट्टानों को तराश–तराश कर उन्हें युग का विधाता एवं देवता बनाकर धरा–धाम पर अवतरित करता है।

शिक्षा में नवीन प्रयोगधर्मिता के लिए विख्यात प्रिं. चित्रा नाकरा जी ने इस अवसर पर ''श्रीमान पूनम सूरी जी'' का भाव भरा अभिनन्दन एवं सम्मान करते हुए कहा–''जो लोग अपने जीवन का कतरा–कतरा राष्ट्र देवता एवं मातृभूमि के चरणों में अर्पित करते हैं उनकी शौर्य कथाएँ इतिहास के स्वर्णिम पृष्टों पर अमर होकर सदा मुस्कुराती हुई लोगों की प्रेरणा शक्ति बन जाती हैं''। विद्यालय के अध्यक्ष श्रीमान नरेन्द्र कुमार ओबेराय जी एवं प्रबन्धक श्रीमान जी. उस. साहनी जी ने श्रीमान पूनम सूरी के कर कमलों से विद्यालय स्थल पर रोग रोधक शक्ति को उत्पन्न करने वाले 'कर्पूर वृक्ष' का रोपण स्मृति रूप में करवाया तथा अपने प्रेरणायुक्त विचार रखे।

वैदिक विद्वानों, अध्यापकों एवं छात्रों ने अपने प्रेरणापद विचार प्रस्तुत किये। आदरणीय प्रधान जी एवम् अनेकों संस्थाओं के अधिकारियों, वैदिक विद्वानों, शिक्षाविदों तथा समाज सेवियों ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

नरेन्द्र देव डी.ए.वी. कुमारगंज में मनाया गया महात्मा हंसराज जन्म दिवस

नरेन्द्र देव डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल कुमारगंज, फैजाबाद (उ.प्र.) में महात्मा हंसराज जी का जन्म–दिवस समारोह धूम–धाम से मनाया गया। इस शुभावसर पर प्रातः काल से लेकर दिनभर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक हवन से किया गया जिसमें विद्यालय के लगभग 1500 छात्र–छात्राओं, सभी शिक्षकों, कर्मचारियों, अभिभावकों एवं अनेक गणमान्य क्षेत्र वासियों ने अपना सहभाग किया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. ओ.पी. मिश्र ने मुख्य यजमान की भूमिका निभाई। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद डॉ. ओ.पी. मिश्र ने महात्मा हंसराज के जीवन के बारे में छात्र–छात्राओं को विस्तार से बताया और कहा कि हमें भी महात्मा हंसराज जी के जीवन की सादगी एवं त्याग की भावना ग्रहण करनी चाहिए। कोई भी व्यक्ति अपने जन्म से नहीं कर्म से बड़ा होता है। महात्मा हंसराज जी भी अपने कार्यों के द्वारा ही आज पूजनीय हैं। इस शुभावसर पर श्री मोहन सिंह एवं श्री आर. पी. पाण्डेय ने भी छात्रों को महात्मा हंसराज के जीवन वृत्त के बारे में बताया। कार्यक्रम में डॉ. राजेश श्रीवास्तव, श्री सुनील अग्रहरी, श्री रमेश उपाध्याय, श्री करनधीर सिंह, विधि पाण्डेय, श्री अखिलेश मिश्र, श्री एस. के. श्रीवास्तव, के.पाल आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 15 जून, 2014 से 21 जून, 2014

हे सोम! हृदय-कलश में प्रवेश करो

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **जगती**।

● (**सोम**) हे सोम परमात्मन्! (तू), (**वृषा**) वर्षक (होता हुआ), (**देववीतये**) दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, (**पवस्व**) प्रवाहित हो, (**इन्द्रस्य**) आत्मा के, (**हार्दि**) हृदय–रूप, (**सोमधानं**) सोम–कलश में, (**आविश**) प्रविष्ट हो।, (**बाधात्**) बाधे जाने से, (**पुरा**) पहले, (**नः**) हमें, (**दुरिता अति**) पापचरणों से लंघाकर, (**पारय**) पार करदे। (**क्षेत्रवित्**) मार्ग का ज्ञाता, (**विपृच्छते**) विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, (**दिशः**) दिशाओं को, (**आह हि**) बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

दो रास्ते

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में हमने पढ़ा कि विज्ञान, इतिहास और अन्य पुस्तकें पढ़ लेने से मनुष्य बुद्धिमान नहीं हो जाता। इस संदर्भ में स्वामी जी ने ''छान्दोग्योपनिषद्'' में वर्णित इन्द्र और विरोचन की कथा सुनाई और कहा कि आज दुनिया विरोचन के रास्ते पर चलकर शरीर को, इसके सुख और आराम को ही सब कुछ समझ रही है। इसमें रहने वाले ''आत्मा'' की ओर इसका कोई ध्यान नहीं।

स्वामी जी ने मानव जीवन के चारों लक्ष्यों – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–को प्राप्त करने के लिए शरीर की रक्षा को आवश्यक बताया। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष क्रमशः बुद्धि, शरीर, मन तथा आत्मा के लिए आवश्यक हैं। यह शरीर ठीक रहता है भोजन, आराम की नींद और ब्रह्मचर्य से शरीर की रक्षा आवश्क है, इसके बिना काम नहीं बनता। यह शरीर ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चारों को प्राप्त करने का साधन है।

अब आगे....

यह है शरीर की महिमा परन्तु यह शरीर ही तो सब कुछ नहीं है मेरे भाई! इसके अन्दर आत्मा रहता है इसी के कारण इस शरीर का महत्त्व है, नहीं तो इसकी कौडी कीमत (मोल) नहीं। इस आत्मा के जाने बिना मनुष्य के जीवन का उद्देश्य पूरा नहीं होता। जिस उद्देश्य के लिए यह जीवन मिला, यह शरीर मिला, वह ही नष्ट हो जाता है, अथवा सारा जीवन ही नष्ट हो जाता है। इसीलिए महर्षि याज्ञवल्क्य ने गार्गी के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा–

"यो वा एतदक्षरं गार्गी! अविदित्वा अस्मात् लोकात् प्रैति सः कृपणः।"

'हे गार्गी! जो मनुष्य इस अजर–अमर आत्मा को जाने बिना इस संसार से चला जाता है, वह बड़ा भाग्यहीन है।' और तब महाराज जनक के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा–

"इहैव सन्तोऽथ विद्मस्तद्वयं न चेदवेदीर्महती विनष्टिः"

' इस मनुष्य–शरीर में ही आत्मा को जानना चहिए। मनुष्य शरीर में ही वह जाना जाता है। जो इसे जाने बिना इस संसार से चले जाते हैं, उनका महानाश हो जाता है।'

यह शरीर केवल एक साधन है– एक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए; वह स्वयं लक्ष्य नहीं है। इन्द्र ने इस बात को समझा, उसने आत्मा को जाना। विरोचन ने इस बात को नहीं समझा, शरीर को ही आत्मा समझ लिया। वह और दूसरे राक्षस इस शरीर को खिलाने, पिलाने, सजाने, आराम पहुँचाने में लग गए और उनका नाश हो गया। और आज इस दुनिया को देखिए, सब लोग विरोचन के रास्ते पर चले जो रहे हैं। कमाओ, खाओ! कमाओ, खाओ! फिर कमाओ, फिर खाओ! और अन्त में मर जाओ क्योंकि मरना तो सबको ज़रूर है।

एक सज्जन मुझे मिले। मैंने पूछा "क्यों भाई,क्या करते हो?"
वे बोले " दुकान करता हूँ।"
मैंने पूछा– "दुकान किसलिए करते हो?"
वे बोले– "धन कमाने के लिए।"
मैंने पूछा– "धन किसलिए कमाते हो?"
वे बोले–"खाने के लिए"
मैंने पूछा– "खाते किसलिए हो?"
वे बोले– "जीने के लिए"
मैंने पूछा– "जीते किसलिए हो?"
तो उसने धीमे से कहा–"यह तो मालूम नहीं"

यह है विरोचन का रास्ता; सब कुछ इस शरीर के लिए हो रहा है। भूल गई है दुनिया कि शरीर एक साधन है। मनुष्य शरीर का ध्येय कुछ और है। भूल गई है दुनिया कि इस शरीर का अन्त भी होना है, इस लोक से परलोक में भी जाना है।

thearyasamaj.org

आज की दुनिया को परलोक भूल गया, आत्मा भूल गया, केवल यह शरीर याद है। इसको खिलाने, पिलाने, नहलाने, सजाने के चिन्ता ही जीवन का आदर्श बन गया।

कठोपनिषद् ने कहा– जो लोग कहते हैं कि परलोक कुछ नहीं, आत्मा कुछ नहीं, वे मूर्ख हैं, विनाश के रास्ते पर जा रहे हैं।

और परलोक ही क्यों, कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि यह दुनिया कुछ भी नहीं, सब मिथ्या है, धोखा है। अरे भाई, यदि यह संसार मिथ्या है तो तुम यह धन क्यों एकत्र कर रहे हो? यह सम्पत्ति, यह बैंक–बैलैन्स, (Bank Balance) यह फिक्स्ड डिपॉजिट (Fixed Deposit) ये बड़ी–बड़ी इमारतें किसलिए बना रहे हो?

मैं आस्ट्रेलिया में था तो एक अस्ट्रेलियन सज्जन ने मुझे कहा–"हम आस्ट्रेलिया वाले पाकिस्तान वालों को अच्छा समझते हैं, हिन्दुस्तान वालों को नहीं।"

मैंने कारण पूछा तो वे बोले– "पाकिस्तान वाले जो कुछ कहते हैं, उस पर आचरण तो करते हैं। हिन्दुस्तान वाले कहते कुछ हैं, आचरण कुछ और करते हैं। कहते हैं जगत् मिथ्या है और धन–सम्पत्ति इकट्ठी किये जाते है।"

और यह बात गलत है नहीं। मैं ऐसे साधुओं और महात्माओं को जानता हूँ जो दूसरों को कहते हैं कि जगत् मिथ्या है, यह सब धोखा और स्वप्न है, और स्वयं बड़े–बड़े आश्रमों और मठों के मालिक बने बैठे हैं। एक बहुत बड़े सन्यासी हैं जिनके पास करोड़ों रुपया है। बम्बई के कई बड़े–बड़े सेठ उनके ऋणी हैं परन्तु "जगत् मिथ्या" का घोष वे भी लगाते हैं। उपदेशों में यही कहते हैं कि "माया का लोभ न करो, इसे त्याग दो, यह ठगनी है" और स्वयं इस माया को एकत्र करते चले जाते हैं, परलोक का ध्यान इनको है नहीं।

एक था राजा। सोने की एक बहुत ही सुन्दर छड़ी उसने बनवाई। उसमें हीरे, नीलम, मोती, पुखराज, कई प्रकार के जवाहरात लगवाए। इक दिन वे उस छड़ी को लेकर अपनी घोड़ा–गाड़ी में जा रहे थे तो श्मशान के पास से गुजरे, देखा, एक भिखारी–सा मनुष्य श्मशान के बाहर बैठा है।

गाड़ी रोकी, उसके पास गए, बोले– "अरे तुम नगर में न जाकर यहाँ क्यों बैठे हो?"

भिखारी ने कहा– "राजा! नगर के सभी लोगों को अन्त में यहाँ आना है, इसलिए मैं पहले ही यहाँ आकर बैठ गया हूँ"

राजा बोले–"यह तो पागलों वाली बात है। तेरी जब बारी आयेगी, लोग तुझे आप ही यहाँ ले आयेंगे। चल नगर में चल!"

भिखारी ने कहा–"तुमको भी यहाँ आना है राजा! एक दिन अवश्य आओगे।"

राजा बोले– "तुम तो वास्तव में घोर पागल हो। अच्छा यह ले छड़ी बहुत मूल्यवान् है यह। इसे अपने पास रखो। यदि किसी को देनी हो तो ऐसे मनुष्य को देना जो तुमसे अधिक पागल हो।"

छड़ी देकर राजा साहब चले गए। कई वर्ष बीत गए। राजा साहब बीमार हुए। बचने की आशा रहीं नही, तो यह भिखारी उनके पास पहुँचा, बोला– "बहुत बीमार हो राजन्?"

राजा ने कहारते हुए कहा, "हाँ! अब तो बचने की आशा नजर नहीं आती। अब तो जाना ही होगा"

भिखारी बोला–"कहाँ जाना है?"

राजा ने कहा– "यह कैसे मालूम होगा? किसी को पता नहीं। तू तो पागलों जैसी बातें करता है। मरने के पश्चात् कौन कहाँ जायेगा, इसका पता कैसे लग सकता है।"

भिखारी बोला–"कोई सामान तो भेज दिया होगा? अपने किसी मन्त्री को या सेक्रेटरी को वहाँ प्रबन्ध करने के लिए भेज दिया होगा"

राजा ने कहा– "तुम वही पागल के पागल हो। यह सबकुछ कैसे हो सकता है?"

भिखारी बोला–"फिर भी तुम्हें जाना है। वहाँ कोई चावल, आटा, दाला, आलू, कुछ राशन तो भेजना चाहिए था?"

राजा ने कहा– "अरे पागल! मैं मर रहा हूँ और तुझे विनोद सूझ रहा है?"

भिखारी बोला–"फिर भी कुछ भेजना तो चाहिए था वहाँ। कुछ तम्बू भेज देने थे, उनमें बिछाने के लिए पलंग, कुर्सियाँ, मेज, गलीचे। सवारी के लिए कोई बग्घी, कोई मोटर, कोई घोड़ा, कुछ दासियों को वहाँ भेज देते, कुछ रानियों को।"

राजा ने चिल्लाकार कहा–"अरे पागल! जहाँ में जा रहा हूँ वहाँ कुछ भी भेजा नहीं जा सकता, वहाँ कोई वस्तु नहीं जाती।"

भिखारी बोला– "तो सुनो राजा! तुमने कहा था कि यह छड़ी उसको देदूँ जो मुझसे ज्यादा पागल हो। तुम्हें पता था कि यह सब–कुछ तुम्हारे साथ नहीं जायेगा, तो तुम यह सब–कुछ इकट्ठा क्यों करते रहे?"

और आज यह दुनिया, ऐसे ही पागलों की दुनिया बन गई है। 'प्रेय मार्ग' को अपनाकर भागी जाती है उस पर। शरीर के लिए धन इकट्ठा कर रही है, मकान और सम्पत्ति जमा कर रही है। हर बात शरीर के लिए हो रही है, और यह जानते हुए हो रही है कि यह शरीर भी साथ जानेवाला नहीं, इसके लिए जमा की गई वस्तुएँ भी। यह पागलपन नहीं तो क्या है?"

परन्तु अब समय हो गया, बाकी बात कल सही।

दूसरा दिन

(पूज्य स्वामी जी महाराज ने ऊँची आवाज और लम्बे स्वर में 'ओ३म्' कहने के बाद अपनी कथा आरम्भ की)

मेरी प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

बहुत सुन्दर स्थान हो, हर प्रकार की सजावट से जगमगाता हो, मधुर संगीत गूँजता हो, फूल खिले हों–केवड़े के भी, रात की रानी के भी, चम्पा और चमेली के भी, उनमें मदमाती सुगन्ध उठकर आने वाले का स्वागत करती हो, नाच भी हो रहे हों, सुन्दर स्त्रियों का जमघट हो, सुन्दर नवयुवक यौवन एवं सुन्दरता की मस्ती के दीवाने हुए जाते हों, ऐसी अवस्था हो कि–

वह मस्ती–ए–कामत कि घटा झूमे के उट्ठे।
वह चुस्त–ए–हर उज़्व कि बिजली को गश आए।।

और ऐसी भी कि

हुस्न का दरिया फ़िज़ा में हर तरफ़ लहराये है।
देखना ऐ दिल, नज़र की नाव डूबी जाये है।।

तो किसका दिल मचल नहीं उठेगा? कौन नहीं जायेगा ऐसी जगह? इसको 'प्रेय मार्ग' कहते हैं– प्यार लगने वाला, मन को भाने वाला मार्ग।

और भूमि हो ऊबड़–खाबड़, काँटों से भरी, कच्ची सड़क, हर तरफ अँधेरा, कहीं प्रकाश नहीं, कहीं सुगन्धि नहीं, सुन्दरता नहीं, गीत नहीं, नाच नहीं, मन को मोहने वाली कोई बात नहीं, परन्तु इसके पीछे है अनन्त सुख, जिसे आनन्द कहते हैं। इसका नाम है 'श्रेय मार्ग'– कल्याण का रास्ता, भलाई का रास्ता।

इन दो रास्तों के बात कल मैं कह रहा था। यह भी कह रहा था कि आजकल बहुत ज़्यादा लोग 'प्रेय मार्ग' पर ही चले जाते हैं, 'श्रेय मार्ग' को भूल गए हैं। इन लोगों का कहना है कि आज जो सुख मिलते हैं उन्हें भोगों, बाद की बाद में देखी जायेगी। ठीक यह है कि–

दिलनशीं दहर के नक्शों को न होने दीजे।
इस ख़याबों से गुज़ र जाइए दरिया होकर।।

परन्तु इन लोगों को तो इस दुनियां के रंगरूप के सिवा कुछ पता ही नहीं। इससे परे भी कुछ है, और क्या है, इसका उन्हें पता नहीं। वे समझते हैं कि परलोक की बात ही वहम है। केवल दिल बहलाने को यह बात कही जाती है–

जानते हम भी हैं जन्नत की हक़ीक़त लेकिन,
दिल के बहलाने को गालिब यह ख़्याल अच्छा है।

और आज के आराम को भोगते हुए इन्द्रियों के सुख में लीन हुए वे कहते हैं–

अब तो आराम से गुंज़रती है।
आक़बत की ख़बर ख़ुदा जाने।।

खुदा (परमात्मा) तो जानता है बच्चू! परन्तु जो कुछ तू करता है, उसका फल तुझे ही भोगना पड़ेगा, खुदा को नहीं। तब तू रोयेगा और तब कुछ बन नहीं पायेगा।

इसीलिए कठोपनिषद् में यम महाराज ने कहा– **'प्रेय मार्ग'** को अपनाने वाले वे लोग हैं जो सोचते नहीं, जो मूर्ख हैं, जिनको या तो बुद्धि है नहीं, या जो इससे काम नहीं लेते। और श्रेय मार्ग को वे लोग अपनाते हैं, तो सोचने और समझने वाले हैं, विद्वान् हैं, जो संतोष से काम लेते हैं धैर्य से काम लेते हैं।

कल मैने **'प्रेम मार्ग'** पर चलने वाली इस दुनिया का कुछ नक्शा आपके सामने रखा। क्या अमेरिका, क्या यूरोप, क्या दक्षिण अमेरिका, क्या दूर–पर्वी एशिया, सब जगह लोग **'प्रेम मार्ग'** पर भाग रहे हैं और बेचैन हो रहे हैं। भाग रहे हैं और दुःखी हैं। भाग रहे हैं और गिरावट के गढ्ढे में गिरे जाते हैं। हमारे भारत में भी यही हो रहा है। अपने देश की बातें मैंने आपाको नहीं सुनाई, तो इसलिए कि आप यहाँ रहते हैं, यहाँ जो कुछ होता है उसे जानते हैं। आज जितना भी अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार और व्यभिचार दुनिया में फैल रहा है, यह सबका–सब प्रेय मार्ग का परिणाम है। जैसे कोई खाँड में लिपटा हुआ विष खाता हो, इस तरह आज की दुनिया 'प्रेयमार्ग' पर दौड़ी जाती है। खाँड खाने में सुख होता है अवश्य, परन्तु विष से मृत्यु भी होती है। 'प्रेय मार्ग' पर चलने वाले आरम्भ में सुख पाते हैं यक़ीनन, परन्तु अन्त में दुःख के गहरे समुद्र में डूब जाते हैं।

भूर्तृहरि ने कहा था–

भोगा ने भुक्ता वयमेव भुक्ताः,
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।।
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः,
कालो न यातः वयमेव याताः।।

भोग नहीं भोगे गए, हम ही भोगे गए हैं। यह दुनिया यूँ ही चलती रहती है, इसे भोगने वाले चले जाते हैं।

यह चमन यूँ ही रहेगा और हज़ारों जानवर,
अपनी–अपनी बोलियाँ सब बोलकर उड़ जायेंगे।

और यह तृष्णा भी समाप्त नहीं होती, हम ही समाप्त हो जाते हैं। तप नहीं–तपा जाता है, हम ही तप जाते हैं। समय नहीं गुजरता, हम ही गुजर जाते हैं।

शेष अगले अंक में....

hearyasamaj.org

वेद एवं वैदिक भाषा अपौरुषेय है या पौरुषेय

● हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

इस सम्बंध में इं. आदित्य मुनि वानप्रस्थ जी ने "वेदों का अपौरुषेयत्व?" पुस्तक में लिखा है कि "मेरे और पं. उपेन्द्र राव के अनुसंधान के अनुसार वेदमंत्र भिन्न–भिन्न समयों में ऋषियों द्वारा प्रकट किये गए उद्‌गार (विचार) हैं जो एक दूसरे से सुन–सुन कर श्रुति के रूप में बहुत समय तक प्रचार में बने रहे जिससे कालान्तर में उनके उद्‌गाता ऋषियों के नाम विस्तृत हो गये। जिससे लोग उन्हें अज्ञात पुरुषों (अ–पौरुषेय) की रचना कहने लगे। जब लाखों वर्ष वाल्मीकि रामायण को कोई नहीं भूल सका, तो वेदों को ऋषि और विद्वान् लोग कैसे भूल सकते थे? बाद में इसका अभिप्राय परमात्माकी रचना किया जाने लगा और उन्हें अग्नि (प्रकाशस्वरूप होने से ज्ञान का वेद), वायु, क्रियास्वरूप होने से कर्म का वेद और आदिव्य (आदिम ऋषियों द्वारा उपासनीय होने से उपासना का वेद) के नाम से संकलित कर परमात्मा द्वारा उपदिष्ट माना जाने लगा और उन्हें त्रयी विद्या के ग्रन्थ भी कहा जाने लगा। अथर्ववेद तो सबके बाद में अस्तित्व में आया जिससे उसके नाम का उल्लेख "मनुस्मृति और वाल्मीकि रामायण तक में नहीं मिलता है।"

यदि अथर्ववेद बाद में बना होता तो ऋग्वेद और यजुर्वेद में उसका नाम क्यों आया है? रेडियों के वर्षों बाद कम्पूप्यटर का निर्माण हुआ जो मार्कोनी के दिमाग के किताब में उसका नाम नहीं था, परन्तु ऋक् और यजुर्वेद में अथर्ववेद का नाम होने से, वह अथर्ववेद बाद में हुआ सिद्ध नहीं होता। देखिये –

'सोअंगिगरोभिरंगिगरस्तमोऽभूद बृषभिः सखिभिः सखा सन् ।

ऋग्मिमि र्ऋग्मीगातुभिर्ज्येष्ठो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती । (ऋ. 1, 100,4)

ऋग्वेद में इस मंत्र में 'अंगिगरोभिः' पद अथर्ववेदियों के लिये है। यदि अथर्ववेद ऋग्वेद के पीछे बना होता या उसका अनुकरण अथर्ववेद ने किया होता, तो ऋग्वेद में अथर्ववेद का नाम न होता। अतः अथर्ववेद ऋग्वेद के साथ ही प्रद्यतज्ञान है।

यजुर्वेद को भी अथर्ववेद का अनुसरण करना चाहिए था, इसका भी साक्षी

यजुर्वेद में है। **अथर्वभ्योऽवतोकाम!** यजु. (30,15) अथार्त् 'अवतोकाम' = गर्भ, सन्तान बाहर निकल गयी हो जिसकी उस स्त्री या गौ आदि को, अथर्वभ्यः = अथर्ववेदी को दें।

यजुर्वेद में अथर्ववेद का नाम आया है, अतः स्पष्ट है अथर्ववेद यजुः का भी समकालीन है। अथर्ववेद अन्य विद्या के साथ शल्य चिकित्सा आदि चिकित्साओं का प्रधान वेद है। अतः यजुर्वेद में रोगी को अथर्ववेदी को देने के लिए कहा है।"

जहाँ तक आविष्कार का प्रश्न है तो जहाँ एक ओर प्राचीन उत्कर्ष का प्रमाण मिलता है, वहाँ कई देशों में मनुष्यों के जंगली उपकरण भी उनकें पिंजरों के साथ पड़े मिलते हैं।

देखिये वैदिक ग्रन्थों के आधर पर 'शून्य' का आविष्कार भारत में ब्रह्मगुप्त ने किया। विश्व का सबसे पहला औषधि विज्ञान भारतीयों ने आयुर्वेद के रूप में किया। चरक ने 25000 वर्ष पूर्व औषधि विज्ञान को आयुर्वेद के रूप में संकलित किया।

अंक गणित का आविष्कार 200 ई. पूर्व. भास्कराचार्य ने किया। बीजगणित का आविष्कार भारत में आर्यभट्ट ने किया। इस प्रकार जनवरी 2013 में मासिक पत्र में 23 प्रकार के आविष्कारों का वर्णन है जिन्हें भारतीयों ने किया है, उनमें से मैने केवल चार को ही उद्‌घृत किया है। (वस्तुतः यह बहुत बड़ा दर्द है कि जानबूझकर अपने देश के नौनिहालों को स्वदेशीय गौरव और उपलब्धियों के ज्ञान से वंचित ही नहीं रखा अपितु 'हर आविष्कार का उल्लेख अधिकतम सौ, दो सौ वर्ष पूर्व वह भी किसी विदेशी अंग्रेज के द्वारा किया गया' यह खूब ज़ोर–शोर से हर पत्र–पत्रिका में सामान्य ज्ञान के रूप में बच्चों के आगे परोसा जाता है। पर सत्य यही है कि ज्ञान–विज्ञान का विविध आविष्कार का यह सूर्य सारे संसार में भारत से ही फैला था। इस प्रकार भारत के ज्ञान विज्ञान की जानकारी से ही पश्चिम आदि के देशों ने साकार रूप में विमान आदि का निर्माण 18 से 19वी सदी में किया जाने लगा।

ऋषि दयानन्द मनु महाराज के श्लोक को उद्‌घृत कर लिखते हैं–

'अग्निवायुर विम्यस्तु त्रयं, ब्रह्म सनातनम्।

दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम।। (मनुस्मृति1,23)

जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ॠग्, यजु,साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।

अग्नेर्वा ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेदः।। (शत. 11.5.8.3)

प्रथम सृष्टि में आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक–एक वेद का प्रकाश किया।

सब जीवों में सबसे अधिक पवित्रात्मा, निर्मल बुद्धि के ज्ञान ग्राहक स्वाभाविक गुण के कार वेद ऋषियों के आत्मा में प्रतिभासित हुए । वेद में कहा है–

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रंयत् प्रैरत नामद्येयं दधना ।

यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत प्रेणा तदेषां निहित गुहानिः।। (ऋ. 10,71,9)

सृष्टि के आदि में पदार्थों के नाम रूप ग्रहण करते हुए ऋषियों के हृदय में (गुरुओं के गुरु) बृह्स्पति ने अपनी श्रेष्ठ वाणी को प्रेरित किया।

चारो वेदों का वर्णन त्रयी विद्या के नाम से भी किया जाता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वेद तीन हैं। यह वर्णन चारों वेदों से संबंधित है। ब्राह्मण ग्रन्थों में त्रयी विद्या का वर्णन आया है। जिस शतपथ ब्राह्मण में चारों वेदों का नामों सहित उल्लेख मिलता हैं, उसी में यह भी लिखा हैं कि **'त्रयी वै विद्या –ऋचो यजूँषि सामानि इति'** अथार्त्– विद्याभेद वे वेद तीन कहाते हैं। (शतपथ ब्रह्मण (4,6,7,)

'त्रयी विद्यामवेक्षेत वेदेषूक्तामाथांगतः। ऋग्सामवर्णाक्षरतो यजुषोऽथर्वणस्तथा।।

(महाभारत शांतिपर्व, 235,1) महर्षि व्यास के इस श्लोक में त्रयी विद्या के साथ चार वेदों का उल्लेख होने से स्पष्ट हो जाता है कि त्रयी विद्या वेद चतुष्टय का ही दूसरा नाम है।

मनु महाराज के अनुसार विद्यायें तीन हैं। – दण्डनीति (राजनीति) आन्वीक्षिकी (पदार्थ विज्ञान) तथा अध्यात्म (शरीर, आत्मा व परमात्मा संबंधी)। वस्तुतः जब संहिताओं अथवा मुख्य प्रतिपाद्य विषय–ज्ञानकर्म, उपासना और विज्ञान को लक्ष्य कर व्यवहार किया जाता है तब निश्चय ही वेद चतुष्टय कहा जाता। लेकिन जब केवल रचना की दृष्टि से वेद का उल्लेख होता है तब वेद त्रयी अथवा केवल त्रयी कहा जाता है। रचना तीन प्रकार की होती है– गद्य, पद्य, गीति। ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद का क्रमशः पद्य गद्य और गीति अर्थ करके चारों वेदों के लिये त्रयी शब्द का प्रयोग भी उत्तरकालीन है।

'ऋचो नामास्मि यजूंषि नामास्मि सामानि नामास्मि।' (यजु. 18,67)

जब स्वयं यजुर्वेद बार–बार चारों वेदों के नाम ले रहा है तब प्रारंभ में एक यजुर्वेद था, कालान्तर में उंसके चार भाग हुए जैसी बातें कैसे स्वीकार की जा सकती है?

"सृष्टि के आदि में सृष्टि की उन दिव्य ध्वनियों (छन्दों) को जानने का ऋषियों के लिए केवल ईश्वर ही का आश्रय था। वे छन्द ब्रह्मण्ड में भी परमात्मा ने उत्पन्न किये और उन ऋषियों के बाहर भी ब्रह्मण्ड पर जड़ होने से उनका ध्वन्यात्मक व वायव्य–आग्नेय प्रभाव ही रहा जब कि ऋषियों पर उनके अर्थ व भाव का प्रभाव हुआ। उस अर्थ व भाव को उन्होंने आगे ब्रह्मा जी को प्रदान किया अर्थात् वेदोपदेश किया और ब्रह्मा जी से विद्या परम्परा आगे चल पड़ी" विशेष जानकारी के लिए देखें आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक कि लिखी हुई ***"वेदविज्ञानभाष्य मण्डलम्–आर्यसत्यजिद् भ्रम भंजनम्"*** प्रस्तिका में। और देखें पं. वीरसेन वेदश्रमी जी की लिखी हुई "वैदिक सम्पदा" को।

आदि ऋषियों को वैदिक भाषा का ज्ञान कैसे पहुंचा?

जिस सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने असीम सामर्थ्य से बिना हाथ–पैर के सारे विश्व की रचना की, उसके लिये बिना वाणी के ऋषियों के मस्तिष्क में ज्ञान का संक्रमण करना अत्यन्त साधारण बात है। अतः जो ईश्वरीय शक्ति विभिन्न प्रकार के प्राणियों को स्वाभाविक ज्ञान दे सकती है और उन पशु–पक्षियों में जो विभिन्न प्रकार की स्वाभाविक बोली पैदा कर सकती है, वहीं शक्ति मानवों में सर्वश्रेष्ठ पवित्रात्माओं को नैमित्तिक ज्ञान के लिए वेद विद्या के साथ भाषा का भी ज्ञान दे सकती है, जो उनकी ध्यानावस्था प्राप्त करा दी, क्योंकि बिना दैवीदेन–भाषा के मानव को नैमित्तिक ज्ञान नहीं हो सकता। इसमें वेद का भी प्रमाण है–

एहि स्तोमाँ अभिस्वराभि गृणी त्रह्यरुव।

ब्रह्म चनो वासे सचेन्द्र यज्ञं चवर्धय।। (ऋ. 1,10,4)

जो वेद विद्या के सच्चे योग से परमेशर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करते हैं, उन्हें ईश्वर अन्तर्यामी रूप में मंत्रों के अर्थ ज्ञान देकर निरन्तर सुख पहुंचाता है। इस कारण उनमें कभी विद्या और पुरुषार्थ का ह्रास नहीं होता है।

मानव उत्पत्ति काल में वेद से निकला हुई वैदिक भाषा संस्कृत ही थी और उस समय इन विविध भाषाओं के बोलने वालों के पूर्वज किसी एक स्थान में रहते थे और एक भाषा बोलते थे। कालान्तर में जब वे अनेक शाखाओं प्रशाखाओं

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका –सारे लोग हमारी इच्छा के अनुकूल व्यवहार करें, क्या ऐसा हो सकता हैं।

समाधान – बिल्कुल नहीं हो सकता। कारण यह कि –

● हर एक का अपना–अपना स्वभाव है। हर एक की बुद्धि दूसरे से अलग है, हर के विचार अलग है, हर एक के संस्कार अलग हैं, हर एक का ज्ञान–विज्ञान का स्तर अलग है। किन्हीं दो व्यक्तियों के विचार सौ प्रतिशत एक समान नहीं हो सकते। उसमें दो, पाँच, दस, पंद्रह, बीस, पच्चीस प्रतिशत यानि कुछ न कुछ तो अंतर रहेगा ही।

● **जिस व्यक्ति के साथ व्यवहार कर रहें हैं, उसके सिर में आपका दिमाग नहीं रखा है, तो फिर वह आपकी इच्छा के अनुकूल व्यवहार कैसे करेगा?** उसके सिर में उसका दिमाग है, इसलिए वह अपने ढंग से व्यवहार करेगा और आपके सिर में आपका दिमाग है, इसलिए आप अपने ढंग में व्यवहार करेंगे। जिसकी जितनी बुद्धि, उतना ही तो वह करेगा।

हाँ, **अगर ऐसा हो जाए कि आपकी बुद्धि** उसके **दिमाग में फिट कर दी जाए,** फिर **तो जैसा आप चाहते हैं,** वैसा व्यवहार भी **वह कर ले, लेकिन ऐसा तो हो** नहीं सकता।

● चाहे कहीं भी रहो, परस्पर विचार–भिन्नता और लड़ाई, झगड़े होंगे। घर–परिवार में राग–द्वेष, अविद्या अधिक होती है। इसलिए वहाँ कलह ज्यादा होती है।

एक आदमी घर में पंद्रह साल रहा। जहाँ–जहाँ विचारों में टकराव आता था, वहाँ–वहाँ उसने समझाने का प्रयास किया लेकिन वो नहीं सुधरे। घर में रहते हुए समाधान नहीं मिल पाया, इसलिए उसने थोड़ा विचार किया कि–''भई, घर की स्थिति–देखते चार–पाँच साल हो गए। वो अब सुधरने वाली नहीं है। इसलिए वहाँ रहने से कोई लाभ नहीं है। चलो, आश्रम चलते हैं।'' आश्रम में वे नई स्थिति में आ गए, नए लोगों के बीच में आ गए। जब वे इनसे थोड़ा व्यवहार करेंगे, तब झगड़ा तो यहाँ भी होगा, लेकिन थोड़ा कम होगा। क्योंकि साथ रहने वाले मनुष्य ही तो हैं। और सारे मनुष्यों में कुछ न कुछ अविद्या तो अभी बची हुई है। अगर अविद्या खत्म हो गई होती तो इस संसार में जन्म नहीं होता, तब मोक्ष ही मिल जाता। अविद्या अभी बाकी है तो राग–द्वेष भी होंगे ही।

अब चाहे दूसरे नगर में जाओ, गांव में जाओ, जंगल में जाओ, जिन भी व्यक्तियों के साथ रहेंगे, उनमें थोड़ा बहुत राग–द्वेष तो रहेगा। अंतर इतना ही है कि घर में ज्यादा अविद्या, राग–द्वेष और झगड़ा था, आश्रम में रहने आ गए तो थोड़े कम अविद्या, राग–द्वेष वाले लोग मिले तो, कम झगड़ा हुआ। यहाँ भी सहन (एडजस्टमेंट) नहीं किया तो लोगों से फिर तनातनी हो गई। फिर गुस्सा आ गया, तो फिर झगड़ा हो गया। अब व्यक्ति वहाँ भी नहीं टिकेगा।

● **बहुत लोगों को घूमते देखा है हमने। घर छोड़े बीस साल हो गए, फिर भी बेचारे आज तक एक जगह से दूसरी जगह भटक ही रहें हैं। एक भी स्थाई जगह नहीं बन पाई। वे कहीं खाने की व्यवस्था में कहीं प्रबंध व्यवस्था में, कहीं आचार्य के विषय में, कहीं शोर–शराबे के विषय में दोष निकालते रहते हैं। वे कहीं भी 'एडजस्ट' नहीं कर पाते। इसलिए मानकर के चलो, व्यक्ति कोई भी हो, वह कुछ न कुछ ऊँचा–नीचा व्यवहार तो करेगा ही।**

● **दो व्यक्तियों के विचारों में कुछ न कुछ अंतर रहेगा ही। दरअसल, उसी को तो हमें समझना है। जो इस अंतर को समझ लेता है, सहन कर लेता है, समायोजन कर लेता है, वो सुखी है, सफल है, उसका जीवन ठीक है,** वह **आगे बढ़ जाएगा, उन्नति कर** पाएगा। **इस अन्तर को हमें** सहन करना है, **वस्तुतः यही 'तपस्या है।' इससे** व्यक्ति **की गाड़ी चल निकलेगी।**

● प्रतिकूलता को सहन नहीं करना टकराव पैदा करेगा, झगड़े पैदा करेगा। तो वो उन्हीं झगड़ों में उलझकर के रह जाएगा, आगे नहीं बढ़ पाएगा। उसकी वास्तविक उन्नति नहीं हो पाएगी। अपने विचारों का समायोजन (एडजस्टमेंट) झगड़े से बचने का मुख्य उपाय है।

****

शंका–रेलगाड़ी और शरीर दोनों ही जड़ पदार्थ हैं। शरीर की वृद्धि होती है, गाड़ी की वृद्धि क्यों नहीं होती?

समाधान – शरीर की वृद्धि इसलिए होती है कि उसमें चेतन 'आत्मा' है। गाड़ी में आत्म है नहीं इसलिए उसकी वृद्धि नहीं होती है। गाड़ी में इंजन है, वह भी जड़ (चेतना–रहित) है।

****

शंका–स्व–स्वामी संबंध अर्थात् मैं इस शरीर का स्वामी नहीं हूँ। यह बात तो ठीक है, लेकिन मैं अपने मन का स्वामी हूँ, यह कैसे ठीक हुआ?

समाधान – 'स्वामी' का एक अर्थ होता है 'मालिक'। जबकि दूसरा अर्थ होता है– कार्य में उपयोग करने का अधिकारी, यानि 'ऑपरेटर'। एक होता है – *'ऑपरेटिंग राइट'* और दूसरा होता है– *'ओनिंग राइट'*। **मालिक होना और कार्य का अधिकारी होना, इन दोनों में बहुत अंतर है।**

एक सेठ ने बहुत बड़ी फैक्टरी लगाई बहुत सारे श्रमिक, कुछ क्लर्क, कुछ ऑफिसर और एक मैनेजर रख लिया। उस प्रबंधक (मैनेजर) को यह अधिकार दे दिया कि यह तुम्हारा ऑफिस है, यह मोटर–गाड़ी है, यह टेलीफोन है, यह स्टेशनरी है, यह फर्नीचर है, तुम इन सबका उपयोग करो। हमारी फैक्ट्री का प्रबंधन करो।

जिस सेठ ने फैक्टरी **लगाई है, वह उसका मालिक है। और जो उसका सहायक है, प्रबन्धक है, वो है उसका 'ऑपरेटिंग मैनेजर'। वो केवल उन वस्तुओं का प्रयोग करने का अधिकारी है।**

वास्तव में वो प्रबंधक उनका मालिक **नहीं है लेकिन उसको** अधिकार दिया गया है कि वो इन सब चीजों का फैक्ट्री के प्रबंध के लिए प्रयोग कर सकता है। जैसे उन सारी चीजों का असली मालिक तो सेठ है, उसी ने सारा प्रबंध करके, फैक्ट्री सेटअप करके, ऑफिस बनाकर के मैनेजर को दिया। ठीक उसी प्रकार से जब यह कहा जाता है कि मैं इस शरीर का मालिक नहीं हूँ' तो इसका अर्थ है कि **''मैं सेठ की तरह नहीं हूँ, बल्कि उस मैनेजर की तरह हूँ।''**

जब यह कहा जाता है कि **''मैं अपने मन रूपी साधन का स्वामी हूँ,' तब भी अर्थ वही है, कि 'मैं आत्मा नामक मैनेजर, मन का प्रयोग करने का अधिकारी हूँ।''तो प्रश्न हुआ– कि फिर सेठ कौन है? उत्तर–ईश्वर। सेठ ने फैक्ट्री लगाकर मैनेजर को प्रबंधन करने के लिए दी। ऐसे ही ईश्वर ने हमें शरीर, मन आदि बनाकर प्रयोग करने के लिए दिए।**

जब बाहर का कोई दूसरा आदमी ऑफिस में कुर्सी तोडने लगता है, तब मैनेजर कहता है–''ऐ! कुर्सी मत तोड़ना, यह मेरी कुर्सी है। '' वो किस अधिकार से ऐसा कह रहा है? वो आफपरेटिंग मैनेजर है, इसलिए ऑपरेट करने के अधिकार का प्रयोग कर रहा है। वह उपयोग करने का मालिक है, वास्तव में मालिक नहीं है। जैसे मैनेजर उस ऑफिस की वस्तुओं का अपनी इच्छानुसार प्रयोग करता है। इसी प्रकार से यह जीवात्मा आपरेटिंग मैनेजर है। इसलिए वो सब उपयोग करेगा, क्योंकि उसका अधिकार ईश्वर ने जीवात्मा को दिया है। मालिक यानि ईश्वर के अभिप्राय के अनुसार ही, वो इन सब चीजों का प्रयोग करेगा। दोनों वाक्यों का तात्पर्य एक ही है। दोनों परिस्थितियों में स्मरण रहे कि हम इन वस्तुओं का प्रयोग करने के अधिकारी हैं। लेकिन हम इसके असली मालिक (ओनर) नहीं हैं।

दर्शन योग महाविद्यालय
रोजड़वन–गुजरात।

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर में होगी प्रवेश परीक्षा

प्राचार्य, श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर,जालन्धर, पंजाब से प्राप्त जानकारी के अनुसार गुरुकुल में सत्र 2014–2015 के लिये केवल कक्षा 6 में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा 20 जून 2014 की तिथि निश्चित की गई है। प्रवेश परीक्षा में भाग लेने हेतु प्राचार्य जी को फोन नं. 0181–2782252 एवं मो. नं. 9888764311 पर सम्पर्क कर अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

thearyasamaj.org

प्रबुद्ध चिन्तक श्री विश्वनाथ

● विराज

शाम के 8.30 बजे थे। तारीख थी 21 मई 2013। टेलीफोन की घंटी बजी मैंने फोन उठाया, विश्वनाथ जी बोल रहे थे, हलो, विराज जी, मैं विश्वनाथ बोल रहा हूँ।

'नमस्ते सर, मैंने आवाज से पहचान लिया है। कहिये क्या हाल हैं? मैंने उत्तर दिया।

'मैं बिल्कुल ठीक हूँ। बहुत दिन से आप आये नहीं। न आपका फोन आया। मेरा आपसे बात करने का बहुत मन हो रहा था। मुझे उत्तर देने का भी समय न मिला। उन्होंने बोलना शुरू कर दिया।

फोन बहुत लम्बा रहा–लगभग चालीस मिनट का इतना लम्बा फोन उन्होंने मुझे पहले कभी नहीं किया था। जो भी बात होती थी, काम काज की होती थी, दो चार मिनट की। परन्तु उस दिन तो वे जैसे भरे बैठे थे, सारा कुछ कह कर सुना डालना चाहते थे। (यह उनका मुझे अन्तिम फोन था)।

मैं मंत्र मुग्ध हुआ सा सुनता रहा। बीच–बीच में केवल 'हां' 'हूं' कह कर यह जताता रहा कि मैं ध्यान से सुन रहा हूँ और सुनना मुझे अच्छा लग रहा है। वे अपने बीते कल की गलियों मे विचरण करते रहे। आर्य समाज के अतीत और वर्तमान को देखकर वे भावुक हो उठे थे। क्या हो गया है आर्य समाज से कहीं कोई उत्साह नहीं, श्रद्धा नहीं। शत कुंडीय यज्ञ हो रहे हैं। प्रगतिशील चिन्तन कहीं है ही नहीं। लगता है जैसे कोई मर्सिडीज् गाड़ी गहरी रेत में फंसी है, जिसके पहिये तो घूम रहे हैं पर वह एक इंच भी अभी नहीं बढ़ पा रही।'

वे पुराने दिनों को याद कर रहे थे, जब बालक ही थे और पिता (शहीद श्री राजपाल जी) के साथ लाहौर की बच्छोवाली आर्य समाज के सत्संग में और वार्षिकोत्सव में जाया करते थे। महाशय राजपाल जी का पूरा परिवार हर साल गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिक उत्सव में भाग लेने हरिद्वार जाया करता था। हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर उतर कर नाव से गंगा पार करके घने जंगल में बसे गुरुकुल तक की पैदल यात्राओं को याद करके वे भावुक हो उठे। मैं भी उसी गुरुकुल में पढ़ा था, इसलिए उनकी अनुभूतियों में सहभागी बन सका।

विश्वनाथ जी सूक्ष्म अन्वीक्षक और उससे भी अधिक निपुण वर्णन कर्ता थे। मैं तल्लीन हो कर उनके भावभरे उद्‌गारों का आनन्द लेता रहा। बीच–बीच में उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए एक दो वाक्य बोल देता था।

मेरा उनका सम्बन्ध मुख्यतः लेखक–प्रकाशक का था। मैंने उनके कहने पर अनेक पुस्तकों के अनुवाद किये थे और मौलिक पुस्तकें भी लिखीं थीं। बाद में उन्होंने मुझे आर्य जगत् साप्ताहिक का सम्पादक भी नियुक्त करवा दिया था। इस नाते मैं उनका अधीनस्थ भी था। मैंने कभी उनको घनिष्ठ मित्र नहीं माना, परंतु इस समय वे घनिष्ठ मित्र की भांति बात कर रहे थे। वे कहना चाह रहे थे कि आर्य समाज में बड़ा आमूल चूल परिवर्तन होना चाहिए। जिस अकर्मण्यता और आलस्य में वह फंसा है, उसमें से उसे उबरने के लिए कुछ नये आन्दोलनों और कार्यक्रमों की आवश्यकता है। संसार तेज़ी से बदल रहा है। यदि आर्य समाज उतनी ही तेजी से नहीं बदलेगा, तो वह पिछड़ जायेगा। शिक्षा का प्रसार हो रहा है, ज्ञान बढ़ रहा है। ज्ञान से प्रबुद्ध नई पीढ़ी पुराने अन्धविश्वासों और रूढ़ियों से बंधी नहीं रह सकती। विश्वनाथ जी वर्षों तक डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त समिति के वरिष्ठ उप–प्रधान रहे। व्यवहार–कुशल पदाधिकारी होने के नाते वे अपने क्रांतिकारी विचारों को खुल कर प्रकट नहीं करते थे। नीति कहती है कि 'रोम में ' रहना है, तो रोमनों का सा आचरण करो।'

जब विश्वनाथ जी का वार्तालाप समाप्त हुआ, तो मुझे लगा कि जैसे देर से चलता हुआ कोई मधुर संगीत सहसा बन्द हो गया है।

तब मेरे मन में एक भयानक विचार जागा इतना लम्बा टेलिफोन क्यों? और इतने भावुकता भरे संस्मरण? मुझे पता था कि कुछ सप्ताहों से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्हें अपनी जीवन यात्रा का अन्त निकट आता दिखाई पड़ रहा है। यह बात उसी समय मैंने पास बैठे घर के लोगों को बता भी दी। 17 जून 2013 को विश्वनाथ जी का निधन हो गया।

विश्वनाथ जी मनस्वी पाठक थे (जो सैंकड़ों पुस्तकें उन्होंने प्रकाशित कीं, उनमें से अधिकांश की पांडुलिपियां उन्होंने पढ़ी थीं), वे अच्छे वक्ता, साथ ही अच्छे लेखक भी थे। (उनकी प्रकाशित कविताएं उनकी प्रतिभा की धोतक हैं)। वे भाव–ताव करने में कठोर थे, परन्तु जो राशि तय हो जाये, उसके समय पर भुगतान का पूरा ध्यान रखते थे। मेरा 60 साल तक उनसे लेखक–प्रकाशक संबंध रहा और मुझे अपना प्राप्य, समय पर बिना मांगे मिलता रहा।

आज उनकी पुण्य तिथि पर उनको मेरी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित है।

राजपूर रोड़
दिल्ली

बात सिर्फ शराब की नहीं

● डॉ. वेदप्रताप वैदिक

एक ताजा सर्वेक्षण से पता चला कि भारत के कुछ नगरों के 45 प्रतिशत नौजवानों को शराब की लत पड़ गई है। दिल्ली सहित देश के ग्यारह शहरों के 2000 नौजवानों के सर्वेक्षण से ये आंकड़े मिले है। इन नौजवानों की उम्र 15 से 19 वर्ष है। पिछले 10 साल में इस लत का असर दुगुना हो गया है। कोई आश्चर्य नहीं कि अगले दस साल में देश के लगभग शत प्रतिशत नौजवान शराबखोर बन जाएं। जरा सोचें कि अगर हालत यही हो गई तो 21वीं सदी के भारत का क्या होगा ? हम गर्व करते हैं कि आज नौजवानों की जितनी संख्या भारत में हैं, दुनियां के किसी भी देश में नहीं है। भारत अगर विश्वशक्ति बनेगा तो इस युवाशक्ति के दम पर, लेकिन अगर हमारी युवाशक्ति इन पश्चिमी लतों की शिकार बन गई तो भारत आज जिस बिन्दु पर पहुंचा है, उससे भी नीचे खिसक जाएगा। यह मामला सिर्फ शराब का ही नहीं है, शराब जैसी अन्य दर्जनों लतों का है, जो भारत के भद्रलोक की नसों में मीठे जहर की तरह फैलती जा रही है।

शराब के बढ़ते चलन के पीछे जो तर्क दिख रहे हैं, वे सतही हैं। उनके पीछे छिपे रहस्यों को हम अगर जान पायेंगे तो दूसरा आधुनिक बीमारियों के मूल तक पहुँचने में भी हमें आसानी होगी और उनका इलाज करना कठिन नहीं होगा। हमारे नौजवान शराब इसलिए पी रहे हैं कि उनके हाथ में पैसे ज्यादा आ रहें हैं वे अपना तनाव मिटाना चाहते हैं और माता–पिता उन पर समुचित ध्यान नहीं दे पाते हैं। ये तीनों तर्क अपनी जगह ठीक नहीं है, लेकिन ये ऊपरी हैं। असली सवाल यही है कि हमारा नौजवान शराब को ही अपना एकमात्र त्राणदाता क्यों मान रहा है और इस गंभीर भूल का पता चलने पर भी माता–पिता और समाज की तरफ से कोई उचित कार्रवाई क्यों नहीं होती ? इसका कारण यह है कि भौतिक विकास की दौड़ में पागल हुआ हमारा समाज बिल्कुल नकलची बनता चला जा रहा है। वह कहता है कि हर मामले में पश्चिम की नकल करो। अपना दिमाग गिरवी रख दो। अपने मूल्यमानों, आदर्श, अपनी परम्पराओं को दरी के नीचे सरका दो। यदि शराब पीना, मांस खाना, व्यभिचार करना, हिंसक बनना, कर्ज लेकर ऐश करना आदि को पश्चिमी समाज में बुरा नहीं माना जाता तो हम उसे बुरा क्यों मानें ? आधुनिक दिखने, प्रगतिशील होने, सेकुलर बनने, भद लगने के लिए जो भी टोटके करने पड़े, वे हम करें। चूके क्यों ? जरा गौर करें कि सर्वेक्षण क्या कहता है ?

उसके अनुसार हमारे नौजवान ज्यादा शराब कब पीते हैं ? क्रिसमस या वेलेंटाइन डे के दिन। ये दोनों त्योहार क्या भारतीय हैं ? हमारे ईसाई भाई क्रिसमस मनाएं, यह तो समझ में आता है, लेकिन जो शराबखोरी करते है, उन आम नौजवानों का ईसा मसीह या क्रिसमस से क्या लेना देना शराब पीना ही उनका क्रिसमस है और वह इसलिए है कि क्रिसमस पश्चिमी समाज का त्योहार है। होली और दीपवली पर उन्हें खुमारी नहीं चढ़ती, लेकिन क्रिसमस पर चढ़ती है, यह किस सत्य का प्रमाण है ?

दिमागी गुलामी की यह गुलामी वेलेंटाइन डे पर प्रकट होती है। जिन भारतीय नौजवानों को महात्मा वेलेंटाइन की दंतकथा का भी सही–सही पता नहीं है, वे आखिर वेलेंटाइन डे से भी सौगुना अधिक मादक वसंतोत्सव है, लेकिन वे उससे अपरिचित हैं ? क्यों हैं ? इसीलिए कि वेलेंटाइन डे पश्चिमी है, आयातित है और आधुनिक है। शराब भी वे प्रायः विदेशी ही पीते हैं। ठर्रा पी लें तो उन्हें दारुकुट्टा या पियक्कड़ कहने लगेंगे। यह कड़वी बात उन्हें कोई कहता नहीं है, लेकिन सच्चाई यही है कि इन नौजवानों को अपने भारतीय होने पर गर्व नहीं है। वे नकलची बने रहने में गर्व महसूस करते हैं।

अगर ऐसा नहीं है, तो मैं पूछता हूं कि आज भारत के 90 प्रतिशत से अधिक शहरी नौजवान पैंट–शर्ट क्यों पहनते हैं? टाई क्यों नहीं लगाते हैं? उन्हें कुर्ता–पायजामा पहनने में शर्म क्यों आती है? स्कूल–कालेजों में कोई भी अध्यापक और छात्र धोती पहने क्यों नहीं दिखता ? कोई वेश–भूषा कैसी भी पहने,

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान लेखक का आत्मकथन

लाला दीवानचन्द ट्रस्ट के सम्मान समारोह में डॉ. भवानीलाल भारतीय का पठित भाषण

● डा. भवानीलाल भारतीय

सम्मानीय अध्यक्ष जी, देवियो तथा सज्जनों,

सर्वप्रथम तो मैं इस बात के लिए क्षमा याचना करता हूँ कि इस सम्मान समारोह में सशरीर उपस्थित नहीं हूँ। तथापि विगत कई दशकों में व्याप्त अपने लेखन कर्म की आपको जानकारी दे दूं। बचपन में बाल पत्रिकाओं ने मुझे लेखन की प्रेरणा दी। इण्डियन प्रेस प्रयाग की बालसखा, लहेरिया सराय, बिहार से निकलने वाले *'बालक'* तथा अन्य बालापयोगी पत्रों में छपने वाले लेखों, यात्रा विवरणों तथा चुटकुलो ने मुझे भी लेखन की प्रेरणा दी। *'बालसखा'* ने मेरे द्वारा संकलित पहेलियों को जब प्रकाशित किया तो अपने नाम को छपा हुआ देख कर मुझे वर्णनातीत आनन्द हुआ था। हाई स्कूल तक आते–आते तो सामयिक समस्याओं पर लिखने लगा। उन दिनों राजस्थान में राजस्थानी को लेकर आन्दोलन चल रहा था। स्व. जयनारायण व्यास, सुमनेश जोशी आदि जोर शोर से राजधानी को प्रांत में राजभाषा का दर्जा दिलाने के लिये कटिबद्ध खेमे के उग्र व्यवहार से यह प्रतीत हो रहा था कि इसमें कहीं न कहीं राष्ट्रभाषा हिन्दी के विरोध का स्वर भी सुनाई देता था। मैंने इस आन्दोलन पर अपने विचार *'वीर अर्जुन'* साप्ताहिक में जब लेखबद्ध किये तब मैं 10वीं का छात्र था। 1945 में उदयपुर में जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ तो मुझे इसके अध्यक्ष स्व. कन्हैयालाल माणेकलाल मुन्शी के विचार सुनने के लिए मिले। इस समय में गांधी जी ने हिन्दुस्तानी का समर्थन करते हुए सम्मेलन से इस्तीफा दे दिया था। वे एक मिली जुली भाषा हिन्दुस्तानी का समर्थन कर रहे थें। किन्तु टण्डनजी तथा मुन्शी जी का मत था कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो सकती है। इस अवसर पर मुझे हिन्दी के अनेक मान्य लेखकों तथा कवियों को देखने का लाभ मिला। डॉ. राजकुमार वर्मा, दिनकर, जगदम्बा प्रसाद हितैषी, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, लखनऊ के हिन्दी प्रकाशक देव पुरस्कार विजेता दुलारे लाल भार्गव की लेखिका पत्नी श्रीमती सावित्री दुलारे लाल के अतिरिक्त हिन्दी प्रचार में लगे बौद्ध भिक्षु भदन्त आनन्द कौसल्यायन को देखना किसी सौभाग्य से कम नही था।

सम्मेलन के इस अधिवेशन पर मैंने अपने संस्मरण लिखे जो *'वीर अर्जुन'* में छपे। स्मर्तव्य है कि इन दिनों हिन्दी साप्ताहिकों में *'वीर अर्जुन'* का नाम था। पं. रामगोपाल विद्यालंकार तथा कृष्णचंद विद्यालंकार जो गुरुकुल कांगड़ी के यशस्वी सम्पादक थे।. धीरे–धीरे मैं अन्य विषयों पर भी *'वीर अर्जुन'* में लिखने लगा। कन्हैयालाल माणिक लाल मुन्शी के उपन्यासों पर मेरे धारावाहिक लेख में प्रकाशित हुए। जब *'भारतीय संस्कृति के प्रतिष्ठाता'* शीर्षक से मेरा एक लेख इस पत्र में छपा तो पारिश्रमिक रूप में आठ रूपये का मनीआर्डर मुझे मिला। मेरा चकित होना स्वाभाविक था। क्या मेरे लेख पारिश्रमिक योग्य है, परन्तु शीघ्र ही मेरे लेखन की दिशा बदल गई। इस समय मैंने कन्हैयालाल मुन्शी और शरतचन्द्र चटर्जी के उपन्यास रुचि पूर्वक पढ़े थे और मेरा विचार इन कथा मूर्धन्यों पर दो ग्रन्थ लिखने का था। इधर मैं आर्य समाज की विचारधारा से बचपन से ही जुड़ा था, इसलिये मुझे आवश्यकता महसुस हुई कि ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के विषय में मुझे कुछ लिखना चाहिए। फिर तो मेरे लेखन की दिशा ही बदल गई। मैं इन पत्रों में नियमित लिखने लगा। मेरे एक मित्र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने तो यहां तक कहा कि आप इन छुटमैये पत्रों में लिखकर अपनी उर्जा क्यों नष्ट करते हैं। इनके बजाय कोई टैक्स्ट बुक लिखिये जिससे कुछ अर्थ प्राप्ति हो। मैंने उन्हें विनम्रता पूर्वक उत्तर दिया कि मैं सरकारी नौकरी (राजकीय महाविद्यालय अजमेर में प्राध्यापक) में हूँ और मुझे परिवार पालन योग्य वेतन मिलता है, परन्तु मैं अपनी लेखनीय ऊर्जा इस संस्था के प्रति समर्पित करता हूँ जिससे मेरा सम्बन्ध है।

फलतः अवशिष्ट जीवन में मैंने भारतीय नवजागरण में ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के योगदान का ही विशद विवेचन किया है। अब तक ऋषि के जीवन तथा कार्य पर मेरे लगभग 70 ग्रन्थ छप चुके हैं तथा ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसाइटी एवं रामकृष्ण मिशन पर मैंने पर्याप्त अध्ययन किया है व लिखा भी है। दशकों तक दयानन्द के जीवन, दर्शन तथा विचारों का अध्ययन करने और एतद् विषयक पत्राचारों व ग्रन्थों को पढ़ने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इस महापुरुष के दर्शन और चिन्तन को समझने में बड़े–बड़े लेखकों ने भी केवल ऊपरी–ऊपरी बातों का ध्यान ही रखा है, उदाहरणार्थ उनके धर्म एवं समाज सुधार, राष्ट्र भाषा प्रचार तथा राष्ट्रीय भावों को विवेचित करने तक ही वे अपने को सीमित रखे हुये हैं। उनकी तुलना में अन्य देशों के कतिपय विद्वानों ने तथा भारत के ही आर्य समाज से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न रखने वाले चिन्तकों ने उनके विचारों को सही रूप में समझा है। उदाहरण के लिये अमेरिका के चिन्तक जे.डेविस, आस्ट्रेलिया की नेशनल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जे.डब्लू. जार्डन्स, अमेरिका के प्रो. केथेन जोन्स आदि ने उनके चिन्तन और कार्य का समुचित मूल्यांकन किया है। इसी प्रकार बंगला लेखक तथा दयानन्द के जीवन विषयक खोज और अनुसंधान करने वाले देवेन्द्रनाथ मुखर्जी, पादरी बनकर आये दीनबन्धु सी.के. एन्डूज तथा योगी अरविन्द ने अत्यन्त सूक्ष्मता से स्वामी दयानन्द के विचारों की यथार्थ परख एवं मूल्यांकन किया है। इसी प्रकार योगी अरविन्द तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हाल में दिवंगत प्रो. रघुवंश ने दयानन्द के जीवन मूल्यों को इस विषय पर मेरा ग्रन्थ 'स्वामी दयानन्द सिद्धान्त और जीवन दर्शन' तो दयानन्द के जीवन तथा कार्यों की ऐसी ही सूक्ष्म विवेचना है।

इसके अतिरिक्त वेदों, उपनिषदों, दर्शन पर मेरे लगभग दो दर्जन ग्रन्थ छपे हैं। मेरे जीवन का एक अन्य आयाम महापुरुषों के जीवन चरित्र लेखन भी है। इनमें दयानन्द के बृहद जीवन चरित्र *"नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती"* के अतिरिक्त 'स्वामी श्रद्धानन्द तथा क्रान्ति चेष्ठा के आदि गुरु पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के जीवन चरित्रों का उल्लेख किया जा सकता है।

सम्पादन, अनुवाद आदि के अनेक प्रोजेक्ट भी मैंने हाथ में लिये और उन्हें पूरा किया। इनमें स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का सात खण्डों में सम्पादन तथा लाला लाजपतराय का 12 खण्डों में सम्पादन का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। गुजराती से अभिज्ञ होने के कारण मैंने अनेक गुजराती ग्रन्थों का अनुवाद किया है। – यथा मीमांसा दर्शन भाष्य, भागवत सार, केशुभाई देसाई के उपन्यास *'सूरज बुझाने का पाप'* आदि।

इस सुदीर्घ कालीन लेखन में उन हजारों स्फुट लेखों की चर्चा करना भी अनुपयुक्त नहीं होगा। इस आत्मनिवेदन में श्लाघा का भाव नहीं है। मैं अपने प्रेरक महानुभावों तथा पाठकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता एवं उनकी गुणग्राहकता के प्रति श्लाघा व्यक्त करते हुए इस आत्मकथन को विराम देता हूँ।

मकान न. 5 शंकर कॉलोनी–3
श्रीगंगानगर (राज.) 335001
फोन नं. – 0154–2466299

आर्ष कन्या गुरूकुल, दाधिया (अलवर) में कन्याओं की शिक्षा का है उचित प्रबन्ध

मन्त्री, आर्ष कन्या गुरूकुल, दाधिया (अलवर) राजस्थान से प्राप्त जानकारी के अनुसार दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह गुरुकुल विस्तृत भू–भाग में फैला हुआ है, जिसमें योग्य अनुभवी आचार्यों द्वारा अध्यापन किया जाता है। गुरुकुल को विभिन्न परीक्षाओं के लिए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त है। कक्षा 6 से 9 तक तथा 11वीं व शास्त्री कक्षाओं के लिए प्रवेश चल रहा है। गुरूकुल के सुरम्य वातावरण में कम्प्यूटर शिक्षा और तरणताल जैसी आधुनिक सुविधायें उपलब्ध है। आचार्य जी से फोन नं. 01495–270503 मो. 09416747308 पर सम्पर्क कर अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज राम नगर, रुड़की

प्रधान	श्रीमती ऊषा रानी
मंत्री	श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी
कोषाध्यक्ष	श्री जे.डी. त्यागी
उप प्रधान/पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री तेजपाल सिंह

thearyasamaj.org

बलिदान दिवस पर सादर श्रद्धाञ्जलि

बिरसा मुंडा : शक्ति और साहस के परिचायक

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतभूमि पर ऐसे कई नायक पैदा हुए जिन्होंने इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों से लिखवाया। एक छोटी सी आवाज को नारा नाम स्वर्णाक्षरों से लिखवाया एक छोटी सी आवाज को नारा बनने में देर नहीं लगती बस दम उस आवाज को उठाने वाले में होना चाहिए और इसकी जीती जागती मिसाल थे बिरसा मुंडा। बिरसा मुंडा ने बिहार और झारखंड के विकास और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अहम रोल निभाया।

अपने कार्यों और आंदोलन की वजह से बिहार और झारखंड में लोग बिरसा को भगवान की तरह पूजते हैं। बिरसा मुण्डा (Birsa Munda) ने मुण्डा विद्रोह पारम्परिक भू-व्यवस्था के जमींदारी व्यवस्था में बदलने के कारण किया. बिरसा मुण्डा ने अपनी सुधारवादी प्रक्रिया के तहत सामाजिक जीवन में एक आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने नैतिक आचरण की शुद्धता, आत्म-सुधार और एकेश्वरवाद का उपदेश दिया। उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के अस्तित्व को अस्वीकारते हुए अपने अनुयायियों को सरकार को लगान न देने का आदेश दिया था।

Brief biography of Birsa Munda

बिरसा मुंडा (Birsa Munda) का जन्म 1857 लिहतु (Village : lihatu) गांव में जो रांची में पड़ता है, में हुआ था। साल्गा गांव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल Chaibasa at Gossner Evangelical Lutheran Mission school में पढने आए। पिता सुगना मुंडा और माता करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा के मन में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ बचपन से ही विद्रोह था।

बचपन में मुंडा एक बेहद चंचल बालक थे। अंग्रेजों के बीच रहते हुए वह बड़े हुए। बचपन का अधिकतर समय उन्होंने अखाड़े में बिताया। हालांकि गरीबी की वजह से उन्हें रोजगार के लिए समय-समय पर अपना घर बदलना पड़ा। इसी भूख की दौड़ ने ही उन्हे स्कूल की राह दिखाई और उन्हें चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल Chaibasa at Gossner Evangelical Lutheran Mission school में पढ़ने का मौका मिला। चाईबासा में बिताए चार सालों ने बिरसा मुंडा के जीवन पर गहरा असर डाला।

1895 तक बिरसा मुंडा एक सफल नेता के रूप में उभरने लगे जो लोगों में जागरुकता पैदा करना चाहते थे। 1894 में आए अकाल के दौरान बिरसा मुंडा ने अपने मुंडा समुदाय और अन्य लोगों के लिए अंग्रेजो से लगान माफी की मांग के लिए आंदोलन किया।

1895 में उन्हें गिरफ्तार करके हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उनके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायाता करने की ठान रखी थी और यही कारण रहा कि अपने जीवन काल में ही उन्हें एक महापुरुष का दर्जा मिला। उन्हे उस इलाके के लोगों "धरती बाबा" के नाम से पुकारा और वे उनकी पूजा करते थे। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी। 1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूंटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियां हुईं। जनवरी 1900 में जहाँ बिरसा अपनी जनसभा संबोधित कर रहे थे, डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक अन्य संघर्ष हुए बहुत सी औरतें और बच्चे मारे गये थे। बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारी भी हुई थी। अंत में स्वयं बिरसा 3 फरवरी,1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार हुए।

बिरसा ने अपनी अंतिम सांस 9 जून 1900 को रांची कारागर में ली. आज बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा भगवान की तरह पूजे जाते हैं।

जागराग जंक्शन से साभार

पृष्ठ 04 का शेष

वेद एवं वैदिक भाषा ...

में विभक्त होकर विविध प्रदेशों में बस गये, तो उनकी भाषा भी विविध रूपों में विकसित होती गई। पर मूलतः एक होने को कारण वह समानता बनी रही जो आज हमें आश्चर्यजनक प्रतीत होती है। अन्ततोगत्वा -जैसे भारतीय भाषाओं का उद्भव भी संस्कृत से है उसी प्रकार यूरोप और एशिया कि विभिन्न भाषाओं का उद्भव भी संस्कृत से है। आज भी संसार की सभी भाषाओं में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द बड़ी संख्या में पाये जाते हैं।

"यां मेधांदेवगाणाः पितरश्चोपासते"। (32,11) यजुर्वेद का जो मंत्र है, यह प्रार्थना मंत्र वेद में, वेद के बाद मनुष्यों के लिये है, माता-पिता आचार्य और देवगणों के लिये है। ऐसा ही विज्ञान सम्बंधी मंत्र-

'त्रयः पवयो मधुवाहनेरथे सोमस्य वेनामनुविश्वइद्विदुः।
त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आरम्भे त्रिनक्तं याथस्त्रिवंश्विना दिवा।। (ऋ.1,34,2)

भाषार्थ- (अश्विना) हे अश्वि शक्तियो! (मधुवाहने रथे) मधुवाहन रथ में सुसज्जित वायुयान में, भव्य विमान में (त्रयः पवयः) तीन कल चक्रवाले (त्रयस्कम्भासः) तीन खम्भे वाले (सोमस्य वेनामअनु) सोम युक्त अर्थात् चन्द्रमां की यात्रा की ओर (आरम्भे) आरम्भ करने योग्य, गमन आगमन में (विश्वे इत् विदुः) सब निश्चय पूर्वक बोध करें (त्रिः नक्तम् उ, त्रिः, दिवा याथः) तीन रात और तीन दिन में ले जा सकते हो।'

तो कहिये आदित्य मुनि जी - उस समय तो चन्द्रयान (चन्द लोक में जाने का कोई साधन) था नहीं किन्तु वेद ने उसका वर्णन पहले ही क्यों कर दिया, कि तीन कल (मशीन) वाले यान = (राकेट) ठीक तीन रात और तीन दिन में ले जा सकते हो। जबकि सर्वप्रथम सन् 1967 में तीन अंतरिक्ष यात्री आर्मस्ट्रांग, माइकेल कोलिन्स और एलिड्रन तीन रात, तीन दिन के बाद चन्द्रयान से चन्द्र लोक में उतरे थे और उतने ही समय के बाद धरती पर.वापस आ गये थे।

अभी इससे भी तीव्र गति से चलने वाले यानों का वर्णन ऋषि वैज्ञानिक भरद्वाज के विमान शास्त्र में किया गया है। इसीलिये ऋषि दयानन्द ने कहा है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

पो. मुरारई जिला वीरभूम
(पं. बंगाल) 73129
मोबाइल- 8158078011

उपनिषद् तथा वेदान्त अध्ययन का स्वर्णिम अवसर

वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन, रोजड़ से प्राप्त एक विज्ञप्ति के अनुसार आश्रम में आध्यात्मिक उन्नति तथा साधना के रहस्यमय ग्रन्थ ग्यारह उपनिषद् एवं तत्पश्चात् सम्पूर्ण वेदान्तदर्शन (ब्रह्मसूत्र) का ऋषि पद्धति से वेदानुकूल व्याख्या सहित नियमितरूप से स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य) द्वारा वानप्रस्थ साधक आश्रम में आगामी आषाढ पूर्णिमा (12 जुलाई 2014) से अध्यापन कराया जाएगा।

इन 11 उपनिषदों व वेदान्तदर्शन अध्ययन में लगभग 8-9 मास लगेंगे। इसके साथ-साथ प्रतिदिन सन्ध्या, हवन, आत्मनिरीक्षण, समय-समय पर अनेक मूर्धन्य विद्वानों के दार्शनिक प्रवचन एवं योगनिष्ठ गुरुवर्य पूज्य स्वामी सत्यपति जी का सान्निध्य, प्रेरणा व उपदेश भी प्राप्त होगा। गुरुकुलीय दिनचर्या, पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व आध्यात्मिक ग्रन्थ अध्ययन में रुचि रखने वाले विद्यार्थी अपना पूर्ण परिचय, नाम, आयु पता, दूरभाष संख्या, शैक्षणिक योग्यता आदि vaanaprastharojad@gmail.com पर 30 जून तक भेजें अथवा व्यवस्थापक, वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड, पो. सागपुर, जि. साबरकांठा, गुजरात-383307 पर पत्रव्यवहार करें। सायं 07.30 से 08.00 बजे 91 9426408026 में सम्पर्क करें।

thearyasamaj.org

देश के चार महान् राजनीतिज्ञ

● खुशहाल चन्द्र आर्य

जब हम अपने प्यारे देश भारत के अतीत का उज्ज्वल इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें चार महान् राजनीतिज्ञों का दिग्दर्शन होता है जो भारत के नभ–मण्डल में अपनी तेजस्विता के कारण देदीप्यमान है। उनके नाम हैं (1) भगवान श्रीकृष्ण (2) आचार्य चाणक्य (3) महाराजा शेर शिवाजी (4) लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल। इन चारों का यहाँ पर संक्षिप्त परिचय देने जा रहे हैं, जो इस भाँति है।

(1) **भगवान श्रीकृष्ण:–** ये महान् योद्धा, बलवान, कुशाग्र, बुद्धिमान, साहसी व परम् धैर्यवान तो थे ही साथ ही एक महान् राजनीतिज्ञ भी थे। महाभारत में कौरवों की तरफ महान् योद्धा दादा भीष्म, (महारथी) गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे महारथी होने के बाद तथा साथ ही एक विशाल ग्यारह अक्षौहिणी सेना के होने पर भगवान श्रीकृष्ण की कुशल राजनीति ही थी जिसके कारण पाण्डवों का कमजोर पक्ष होते हुए भी उनको विजय दिलवाई। इस विजय का पूरा श्रेय भगवान श्रीकृष्ण को जाता है। महाभारत में एक नहीं अनेक स्थल ऐसे आते हैं, यदि उस समय श्री कृष्ण अपनी बुद्धिमत्ता न दिखाते तो पाण्डवों का विजयी होना असंभव ही थी। कर्ण, अर्जुन से हर बात से अधिक बलशाली था। उसका रथ कीचड़ में फंस जाने पर कर्ण को मारने का संकेत देना, अर्जुन द्वारा जयद्रथ को सूर्य छिपने से पहले मारने की प्रतिज्ञा को सफल बनाना, दादा भीष्म व गुरु द्रोणाचार्य को मारने की युक्ति बताना, दुर्योधन की जाँघ पर भीम द्वारा प्रहार करवाना आदि सामयिक कार्य करवाना श्री कृष्ण की ही बुद्धिमत्ता थी जिससे कारण पाण्डवों को विजय प्राप्त हुई। श्रीकृष्ण एक अद्वितीय महापुरुष थे, उनमें आपत्तियों से निकलने की अद्भुत क्षमता थी जिसके कारण वे हारी बाजी को जीत लेते थे। वे वेदों के भी प्रकाण्ड विद्वान् थे, तभी तो वे गीता ज्ञान देकर अर्जुन का मोह भंग करवाकर युद्ध के लिए तैयार कर सके। भगवान श्री कृष्ण का धर्म, अन्य धर्माधिकारियों की तरह "अंहिसा परमोधर्म:" वाला धर्म नहीं थी। उनका धर्म, पापियों दुष्टों को छल, बल आदि किसी भी प्रकार से मार देना ही था। उनका कहना था कि जो पापी का साथ देता है, वह भी पापी है, उनको मारना भी धर्म है इसलिए दुर्योधन पापी का साथ देने वाले दादा भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे लोगों को पापी समझ कर ही मरवाया। श्री कृष्ण की राजनीति केवल सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है।

(2) **आचार्य चाणक्य:–** भारत के इतिहास में राजनीति में दूसरा स्थान आता है आचार्य चाणक्य का। ये भी एक विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। इस अवध के अन्यायी राजा महानन्द ने अपने मन्त्री चाणक्य का अपमान करके उसको अपने महल से निकाल दिया। तब महा पण्डित चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं महानन्द के इतने बड़े साम्राज्य को नष्ट करके ही दम लूँगा और उसने वैसा ही कर दिखाया। चाणक्य एक बड़े दूरदर्शी व्यक्ति थे। जब उसने देखा कि राजमहल के बाहर ही महाराजा की दईया मूरी का एक होनहार लड़का जिसका नाम चन्द्रगुप्त था, अपने साथियों के साथ खेल रहा था और वह राजा का पार्ट लेकर खेल रहा था। चाणक्य की दूरदर्शिनी बुद्धि ने जान लिया कि यह बालक विलक्षण बुद्धि का है, यदि इसको शस्त्र विद्या सिखा दी जाए तो इसके द्वारा मैं महानन्द को परास्त कर सकता हूँ और ऐसा ही करके चन्द्रगुप्त द्वारा महानन्द को परास्त किया और उसके साम्राज्य का विनाश करके चन्द्रगुप्त को सम्राट बना दिया और स्वयं अवध राज्य का महामन्त्री बनकर जंगल में एक कुटिया में एक तपस्वी जीवन बनाकर रहने लगा। राज्य की व्यवस्था इतनी बढ़िया व सुदृढ़ थी कोई भी राजा चन्द्रगुप्त के राज्य की तरफ आँख उठाकर देखने का दुस्साहस नहीं कर सकता। चाणक्य ने एक 'चाणक्य–नीति' पुस्तक भी लिखी जिसको पढ़कर लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं। चाणक्य जैसा बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ, चरित्रवान व राष्टहित के प्रति समर्पित भाव वाले व्यक्ति भारत के इतिहास में ढूँढ़ने से भी बहुत कम मिलते हैं। उसके महामन्त्री काल में जनता पूर्ण सुखी व आनन्दित थी। कहा जाता है कि जिस राज्य का मन्त्री जंगल में कुटिया बना कर रहेगा, तो उसकी जनता महलों में आनन्द की नींद सोएगी और जिस राज्य का मन्त्री महलों में ऐश करेगा, उसकी जनता झोंपडियों में रहकर दु:खी जीवन व्यतीत करेगी। इस बात को चाणक्य ने चरितार्थ करके दिखा दिया। आज के शासक महामन्त्री महलों में व फाइव स्टार होटलों में रहते हैं, तभी आज की जनता दु:खी है। जनता को आतंकवादियों का भय और महँगाई की मार सहनी पढ़ रही है। आज के मंत्रियों को चाणक्य के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

(3) **शेर शिवाजी:–** भारत के इतिहास में राजनीति के क्षेत्र में शेर शिवाजी महाराज का भी एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे भी एक अद्वितीय साहसी और विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। इसलिए वे एक साधारण छोटे से राज्य के राजा होकर, औरंगजेब जैसे अन्यायी, बड़े राज्य से टक्कर लेने में सफल हो गए। उनकी माता जीजाबाई एक धार्मिक और राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत विदुषी महिला थी जिसने अपने पुत्र शिवा को बचपन से ही अच्छी अच्छी धार्मिक, वीरता की कहानियाँ सुना–सुनाकर उसे एक देश भक्त राजा बना दिया। शिवाजी ने अपनी गतिविधियों से औरगंजेब की नींद हराम कर रखी थी। औरंगजेब उन्हें पकड़ने की जितनी भी चालें चलता था, शिवाजी उन्हें निष्फल कर देते थे और उसकी पकड़ में नहीं आते थे एक बार औरगंजेब ने अफजल खाँ को शिवाजी से सन्धि करने भेजा, यह भी उसकी चालाकी थी जिसे शिवाजी ने नाकाम कर दिया था और अफजल खाँ के चंगुल से निकल गए। एक बार शिवाजी औरंगजेब की पकड़ में आ गए और उन्हें जेल में डाल दिया, पर शिवाजी जेल से ऐसी चतुरता से निकल गए कि औरंगजेब को पता भी नहीं लगा। शिवाजी ने अपने छोटे से राज्य को हिन्दू राज्य घोषित करके इतना सुन्दर ढंग से राज्य चलाया कि भारत के इतिहास में एक उदाहरण बन गया।

(4) **लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल:–** सरदार पटेल आधुनिक समय के श्रीकृष्ण कहलाते हैं। जिस प्रकार श्री कृष्ण ने खण्डित भारत को संगठित करके महाभारत बनाया, उसी प्रकार सरदार पटेल ने 562 रिसायतों को मिलाकर एक विशाल भारत बनाया। सरदार पटेल की विलक्षण बुद्धि, दृढ़ निश्चय, अपरिमित साहस, संगठन शक्ति को देखकर ही जनता ने उन्हें लौह पुरुष की उपाधि से विभूषित किया। सरदार पटेल एक ऐसे दृढ़ विश्वासी व्यक्ति थे कि जो काम करने ठान ली, उसे पूरा करके ही रहे।

अंग्रेजों ने हमें 15 अगस्त 1947 को आजादी तो जरूर दी परन्तु वह अधूरी आजादी थी। उस अधूरी आजादी को पूर्ण आज़ादी में परिवर्तन करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। अँग्रेज जब भारत छोड़कर गए थे, तब भारत में 562 देशी रियासते व रजवाड़े थे। वे सभी को स्वतंत्र छोड़कर गए थे। सभी रियासते चाहे तो भारत में मिलें या चाहे पाकिस्तान में मिलें या स्वतंत्र रहें। सब छूट देकर गए थे। वे तो यही उम्मीद रख कर गए थे कि 562 रियासतों व रजवाड़ों को भारत कभी भी नहीं मिला सकेगा और परस्पर लड़ाई–झगड़ा चलता रहेगा जिससे देश में अशान्ति बनी रहेगी। अन्त में हम ही आकर राज्य सम्भालेंगे, पर सरदार पटेल ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। पटेल जी ने इतना होशियारी व चातुर्य वे सब राजाओं को समझाकर, डराकर या किसी से युद्ध करके सबको भारत में मिला लिया। जूनागढ़ व ग्वालियर महाराजा ने कुछ आनाकानी की थी, परन्तु उनको भी समझा बुझाकर मना लिया। केवल हैदराबाद का बादशाह नहीं मिलना चाहता था। उसको भी सेना भेजकर चार घंटों में भारत में मिला लिया। अब केवल कश्मीर की एक समस्या आ गई। जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी, तब वहाँ के राजा हरिसिंह ने दिल्ली आकर पटेल जी से सन्धि कर ली, तब पटेल जी ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी और दो तिहाई हिस्सा कश्मीर का भी जीत लिया, तभी नेहरू जी ने बीच में टाँग लगाकर सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया और कश्मीर की समस्या को जहाँ की तहाँ रखकर केस को U.N.O (राष्ट्र संघ) में दे दिया, यदि ऐसा न होता तो काश्मीर की समस्या भी हल हो गई होती और आज भारत विश्व के मजबूत और सुदृढ़ देशों में गिना जाता। आज हमें पाकिस्तान जैसा छोटा देश भी आँख दिखा रहा है। यदि काश्मीर समस्या हल हो जाती तो चीन और अमेरिका भी हमें आँख नहीं दिखा सकते थे और भारत एक सुदृढ़ देश के रूप में खड़ा हुआ दीखता और हम सभी भारतवासी सुख और आनन्द की नींद सोते।

180 महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकाता–700007
मो. 9830135794

thearyasamaj.org

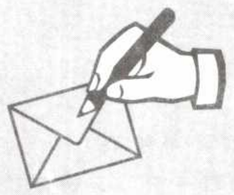

पत्र/कविता

विद्युत्-शवदाहक का प्रयोग करें

''*सार्थक परामर्श*'' लेख पर फोन द्वारा अनेक सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया प्राप्त हुई हैं। एतदर्थ उनकी सहृदयता के लिए अत्यन्त आभारी हूँ। श्री देवराज आर्य मित्र दिल्ली एवम् श्री गोवर्धन आर्य देवास, म.प्र. के एतत्-सम्बन्धी सुझावपूर्ण दो पत्र भी प्राप्त हुए हैं। मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट किए बिना नहीं रह सकता।

सबसे से महत्वपूर्ण परामर्श फोन द्वारा 27 मई को साय श्री अर्जुन देव जी स्नातक, आगरा का प्राप्त हुआ। उनका सुझाव है कि जहां पर ''विद्युत्-शव दाहक केन्द्र'' स्थापित हैं, वहां की जनता को इनका उपयोग अवश्य करना चाहिए। क्योंकि यह सस्ते पड़ते हैं। कुछ ही समय में '**भस्मा तं शरीरम्**' हो जाता है।

मैंने जिज्ञासा प्रकट की – 'इस पर खर्च अधिक आता होगा?' उनका उत्तर था– 'खर्च अधिक नहीं आता। पहले डेढ़ सौ आता था। हो सकता है अब तीन सौ हो गए हों।' मैंने कहा– 'यह तो कुछ भी नहीं। यहां फाज़िल्का में सात मन लकड़ियों पर दो हजार खर्च हो जाते हैं। उनसे तो यह सस्ता है।

दूसरी जिज्ञासा मैंने प्रकट की – ''क्या घी, सामग्री आदि से हवन भी किया जा सकता है?''

स्नातक जी ने उत्तर दिया – ''हां, हो सकता है। शव इतनी जल्दी जलता है कि मन्त्र भी पूरे नहीं बाले जाते। सब कुछ जल्दी-जल्दी करना होता है।'' इससे इतना तो स्पष्ट हो गया कि मन्त्र उच्चारण के साथ शव पर घी, सामग्री आदि पदार्थ डाले जा सकते हैं।

विद्युत्-शवदाह के बारे में तो जानकारी थी परन्तु विधिपूर्वक संस्कार करने के बारे में मैं अनजान था जो श्री स्नातक जी ने स्पष्ट कर दिया। बड़े शहरों में सभी जगह विद्युत् शवदाहक केन्द्र हैं, परन्तु शव दाह का प्रचलन कम है। आर्यबन्धुओं को इसके प्रयोग की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। अन्धविश्वास से मुक्त होकर जागें और जगाएं। इससे शुद्ध पर्यावरण की भी रक्षा होती है।

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए यह विधि अत्यन्त लाभप्रद है। सभी विचार धाराओं के लोग शवदाह के पूर्व के समस्त कार्य अपने-अपने मतानुसार घर तथा एतादृश कार्य के लिए स्थापित शिववाटिका। श्मशान में सम्पन्न करके 'विद्युत्-शवदाहक केन्द्र' पर ले जाकर शवदाह करें। बिजली चले जाने पर जेनरेटर का भी प्रबन्ध होता है। ये केन्द्र प्रायः श्मशान भूमि के समीप होते हैं।

एतदर्थ प्रेरणा जागृति की अत्यन्त आवश्यकता है। अनेक लोग परम्परा तोड़ने में हिचकिचाते हैं। यदि विवाह, जन्मदिन, दहेज का लेन-देन, फैशन तथा अन्य अनेक आधुनिक रीति-रिवाजों का अन्धानुकरण कर सकते हैं तो शव दाह हेतु आनाकानी क्यों? किसी को तो आगे आना ही होगा। यदि एक बार प्रचलन शुरु हो गया तो सारे भ्रम मिट जायेंगे। और '***मिटी धुंध जग चानन होया***' की उक्ति सार्थक हो जायगी।

अगले दिन फोन पर मैंने श्री स्नातक जी से 'अस्थि चयन' के बारे में जानकारी ली। उन्होंने बताया कि दो-तीन घण्टे बाद ही अस्थियां दे देते हैं। यदि उस समय पहुँचना न हो सके तो वहां के कर्मचारी बोरे में भरकर उस पर नाम लिख देते हैं। अपनी सुविधानुसार जाकर आप ले सकते हैं। इस प्रकार समय की भी बचत होती है, साथ ही सुविधाजनक भी। श्मशान में ठण्डा होने के लिए दो-तीन दिन की प्रतीक्षा करनी पड़ती है, अथवा पानी डालना पड़ता है। यहां पर कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। अस्थि चयन के पश्चात् के सारे कृत्य आप अपनी विचारधारा के अनुसार कर सकते हैं। किसी प्रकार की आपत्ति/आशंका अनुसार कर सकते हैं। किसी प्रकार की आपत्ति/आशंका की कोई बात नहीं।

सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं के द्वारा अपने-अपने समाज, जाति, बिरादरी में इसके प्रति चेतना उत्पन्न की जानी चाहिए। आर्यसमाज को आगे बढ़ कर इस हेतु अवश्य प्रयत्नशील होना चाहिए। प्रतिक्रियाएं सादर आमन्त्रित हैं।

वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन
4-E, कैलाश नगर, फाज़िल्का, पंजाब
09463428299

****

करो देश का ध्यान

ऋषियों का यह देश है, आर्यवर्त महान।
भारत की थी विश्व में सबसे ऊँची शान।।
सबसे ऊँची शान, भारती थे उपकारी।
करती थी सम्मान, हमारा दुनियां सारी।।
वेदों का प्रचार, भारती तब करते थे।
सकल विश्व की पीर, भारती ही हरते थे।।

सबसे बड़ी विशेषता, ईश्वर के थे भक्त।
श्रेष्ठजनों को थे नरम, दुष्टों को थे सख्त।।
दुष्टों को थे सख्त, दया थी हर दिल अन्दर।
अन्दर से थे सही, ठीक जैसे थे बाहर।।
इसीलिए संसार, सक, करता था आदर।
आन-बान के धनी यहां थे सब नारी-नर।।

सुनो सभी नर-नारियो, आज काम की बात।
वेदों के पथ पर चलो, बंद करो उत्पात।।
बंद करो उत्पात, जगत् में करो भलाई।
करो धर्म के काम, मार्ग है यह सुख दाई।।
धीर-वीर वलवान बनो, मिल कदम बढ़ाओ।
राम कृष्ण की तरह, जगत् में आदर पाओ।।

आर्यजनो! अब है यही, सुनो हमारा धर्म।
सोच समझकर के करें, हम सब अच्छे कर्म।।
हम सब अच्छे कर्म, सभी कर्तव्य निभाएं।
जो हैं मानव श्रेष्ठ, उन्हीं को आगे लाएं।
करो देश का ध्यान, साथियो! कदम बढाओ।
आर्यवर्त्त को पुनः, जगत् का गुरु बनाओ।।

पं नन्दलाल निर्भय पत्रकार भजनोपदेशक
ग्राम पत्रालय-बहीन जनपद पलवल
चलभाष – 9813845774

संन्यासी पानी-पानी हो गया

एक दिवस स्वामी दयानन्द पीतल की थाली में भोजन कर रहे थे। एक धूर्त संन्यासी ने स्वामी जी को टोकते हुए कहा कि संन्यासियों को धातू का स्पर्श वर्जित है।

स्वामी जी निश्चंत होकर भोजन करते रहे। जैसे कि उन्होंने कुछ सुना ही नहीं! भोजन के उपरान्त वह इस संन्यासी से बोले कि भोजन पाकर आनन्द आ गया। आपने क्या कभी धातु का स्पर्श नहीं किया? संन्यासी बोले कि राम-राम, राम-राम, शिव-शिव, शिव-शिव! धातु का स्पर्श और संन्यासी? धातु का स्पर्श करने से पूर्व संन्यासी को शिव धाम जाना ही उचित है।

यह सुनते ही स्वामी दयानन्द जी के चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान फैल गई। स्वामी जी ने संन्यासी से पूछा कि सिर के बाल साफ करने के लिये आप क्या बगैर धातु के उस्तरों का प्रयोग करते हैं? वह उस्तरा मुझे को भी दिखाओ। क्योंकि आप धातु के उस्तरों का प्रयोग तो कर नहीं सकते?

स्वामी जी के इस हास-परिहास और व्यंग्यात्मक जवाब को सुन कर वह संन्यासी पानी-पानी हो गया।

कृष्ण माहन गोयल
113- बाजार कोट, अमरोहा 244221

****

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 6 का शेष

बात सिर्फ शराब ...

उसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन कोई अपनी स्वाभाविक वेश–भूषा, पारम्परिक वेश–भूषा को हीन भाव से देखे और अपने पुराने मालिकों की वेशभूषा को गुलामों की तरह दैवीय दर्जा देने लगे तो उसे आप क्या कहेंगे? ठंडे देशों में शराब का प्रचलन है और टाई समेत थ्री पीस सूट पहने जाते हैं, लेकिन भारत जैसे गर्म देश में भी इन चीजों से चिपके रहना कौन सी आधुनिकता है? खुद को असुविधा में डालकर नकलची बने रहना तो काफी निचले दर्जे की गुलामी है। यदि ऐसी गुलामी भारत बढ़ती चली जाए तो उसके सम्पन्न होने पर लानत है।

यहां मामला शराब और वेश–भूषा का ही नहीं है, सबसे गंभीर मामला तो भाषा का है। आजादी के 67 साल बाद भी अंग्रेजी इस देश की पटरानी बनी हुई है और हिन्दी नौकरानी। किसी को गुस्सा तक नहीं आता। बुरा तक नहीं लगता। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से लेकर बाबुओं और चपरासियों ने भी अंग्रेजी की गुलामी का व्रत धारण कर रखा है। शराब की गुलामी से भी ज्यादा खतरनाक अंग्रेजी की गुलामी है। विदेशी भाषाओं और ज्ञान–विज्ञान से फायदा उठाने का मैं जबर्दस्त समर्थक हूँ, लेकिन अपनी मां पर हम थूंके और दूसरे की मां के मस्तक पर तिलक लगाएं, इससे बढ़कर दुष्टता क्या हो सकती है? यह दुष्टता भारत में शिष्टता कहलाती है। यदि आप अंग्रेजी नहीं बोल पाएं तो इस देश में आपको कोई शिष्ट और सभ्य ही नहीं मानेगा। देखा आपने, कैसा सूक्ष्म सूत्र जोड़ रहा है शराब, पैंट–शर्ट और अंग्रेजी को। हम यह भूल जाते हैं कि शराब ने रोमन और गुलाम जैसे साम्राज्यों की जड़ों में मट्ठा डाल दिया और विदेशी भाषा के जरिए आज तक दुनिया का कोई राष्ट्र महाशक्ति नहीं बना, लेकिन इन मिथ्या विश्वासों को हम बंदरिया के बच्चे की तरह छाती से चिपकाएं हैं। दुनिया में हमारे जैसा गुलाम देश कौन सा है?

इस गुलामी को बढ़ाने में कामनवेल्थ का योगदान अप्रतिम है। कामनवेल्थ को क्या हमने कभी कामन बनाने की आवाज उठाई? उसका स्थायी स्वामी ब्रिटेन ही क्यों है? हर दूसरे–तीसरे साल उसका अध्यक्ष क्यों नहीं बदलता गुटनिरपेक्ष आंदोलन की तरह या सुरक्षा परिषद की तरह? उसकी भाषा अंग्रेजी क्यों है, हिन्दी क्यों नहीं? कामनवेल्थ के दर्जनों देश मिलकर भी भारत के बराबर नहीं हैं। हिन्दी दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। दुर्भाग्य तो यह है कि आज देश में हमारे राजनीतिक दल और यहां तक कि साधु–महत्मा भी शक्ति संधान और पैसा महान पैसा महान में उलझ गए हैं। दयानन्द, गांधी लोहिया की तरह कोई ऐसा आन्दोलन नहीं चला रहे, जो भारत के भोजन , भजन, भाषा, भूषा और भेषज को सही पटरी पर लाए। इस पंचभकार का आह्वान अगर भारत नहीं करेगा तो पंचमकार, मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन का मार्ग तो पश्चिम न हमें दिखा ही रखा है पश्चिम तो अब उठकर गिर रहा है, हम उठे बिना ही गिर जायेगें।

242, सेक्टर 55
गुड़गांव–122011
(अग्निदूत से सभार

अग्निहोत्र में जलप्रोक्षण की सार्थकता

● सुशील वर्मा

अग्निहोत्र में जल प्रोक्षण के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि में चार मन्त्र प्रयुक्त किए हैं।

1. ओ३म् अदिते ऽ नुमन्यस्व (इस मन्त्र से पूर्व)
2. ओ३म् अनुमते ऽ नुमन्यस्वउ (इस मन्त्र से पशिचम)
3. ओ३म् सरस्वते ऽ नुमन्यस्व (इस मन्त्र से उत्तर)
4. ओ३म् देव सावितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। (इस मंत्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़के)

दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं न स्वदतु।।

स्वामी जी ने यहाँ केवल दिशाओं का उल्लेख किया है। परन्तु यहाँ निर्देश नहीं दिया गया कि किस दिशा में किस ओर से जल छिड़कें। पहल तीन मन्त्र गोभिल गुह्य सूत्र1–3 एवं चौथा युजर्वेद से सम्बन्धित हैं। उपरोक्त प्रश्न का उत्तर अपास्तम्ब गृह्य सूत्र 1/2/3 से प्राप्त होता है।

अदितेऽ नुमन्यस्वेति दक्षिणतः प्राचीनम्,
अनुमतेऽनुमन्यस्वेति पशचादूदीचीनम्
सरस्वत्येनुमन्यस्वेति उत्तरतः प्राचीनम्
देवसवितः प्रसुवेति समन्तम्।।
आपस्तम्ब गृहयसूत्र 1/2/3

अर्थात पूर्व और पश्चिम में जल छिड़कते समय दक्षिण से उत्तर की ओर जल की गति होगी और जब उत्तर में जल छिड़के तो पश्चिम से पूर्व की ओर जल की गति। चारों तरफ जल छिड़कते समय पूर्व दक्षिण कोण से प्रारम्भ करके दक्षिण पश्चिम, उत्तर पूर्व क्रम से प्रदक्षिणा की तरह। जल प्रोक्षण पूर्व दक्षिण कोण पर जहाँ से प्रारम्भ किया था वहीं पहुँच कर विश्राम होगा संक्षिप्त में पहले मन्त्र से जल प्रोक्षण पूर्व में अपने दाईं ओर और बाकी सभी जगह अपने बाईं ओर में जल डाला जाए।

जल प्रोक्षण क्यों?

1. पञ्च धृताहुतियाँ प्रदान करने के पश्चात् जल छिड़का जाए ताकि कोई जीव जन्तु अग्नि कुण्ड के समीप न आ सके। यदि यही क्रिया यज्ञ प्रारम्भ करने से पहले की जाती और बाद में अग्न्याधान किया जाता तो सम्भवतः यज्ञ कुण्ड के भीतर या समीप छिपा जीव जन्तु बाहर नहीं आ पाएगा।

2. दूसरा मुख्य कारण वैज्ञानिक है। क्योंकि यज्ञाग्नि मे आहुतियाँ डालते समय बहुत सी गैसें उत्पन्न होती हैं, जिनमें से कुछ जल के साथ फार्मेलडीहाइड बनाती है जो अपने आप में कृमिनाशक है। इस प्रकार हवन कुण्ड के समीपस्थ वातावरण पूर्णरूपेण कृमिहीन बना रहता है।

3. भौगोलिक स्वरूप

भौगोलिक रुप में पृथ्वी के अन्दर भौम अग्नि स्थापित रहती है तथा पृथ्वी के चारों ओर जल ही जल है। यही प्रारुप पृथ्वी रुप यज्ञकुण्ड के गर्भ में भौमाग्नि व इसके चारों ओर जल। यह भी यज्ञ कल्पना का प्रतिरूप है। इस जगत में अग्नि एंव सोम तत्वों का एक महत्वपूर्ण योगदान है। पवित्रता एवं सुख शान्ति तभी सन्तुलित रह सकती हैं यदि इन दोनों अर्थात अग्नि व सोम तत्व का सन्तुलन बना रहे।

4. अध्यात्म पक्षः– अध्यात्म परिप्रेक्ष्य में यदि हम मनन करें तो इसे सभी प्रकार समझा जा सकता है। हवनकुण्ड जहाँ अग्नि प्रज्वलित हो रही है वह प्रकाश लोक है। जहाँ यजमान उपस्थित है वह है मर्त्यलोक। इन दोनों लोकों के मध्य जल विद्यमान है। अर्थात भूः पृथ्वी, यजमान के बैठने का स्थान, भुवः– यज्ञकुण्ड के चारों ओर जल राशि, स्वः यज्ञाग्नि–प्रकाश लोक। यजमान ने पृथ्वी लोक से प्रकाशलोक का मार्ग तय करना है इस जल राशि को मध्यस्थ बना कर। इस जल राशि के प्रतीक रुप दो किनारे है। पहला यजमान की तरफ श्रद्धा एवं दूसरी तरफ प्रकाश अर्थात हवन कुण्ड की तरफ त्याग का। श्रद्धा एवं त्याग के द्वारा ही स्वलोक पहुँचा जा सकता है। अग्नि अपनी ज्वाला से प्रेम के जल को अमृतरूप में वाष्प बनाकर भूः के उपर से भुवः का रास्ता प्रशस्त करती हुई स्वलोक के साथ सम्बन्ध युक्त करती है।

5. आधिदैवत एवं अध्यात्म संयुक्त रूप पक्ष :–

यदि हम चारों मन्त्रो का आधिदैवत एवं अध्यात्म के संयुक्त रुप में चिन्तन करें तो परिणाम स्वरुप एक एक देवता से यज्ञ के अनुमोदन करने की प्रार्थना समक्ष प्रकट होती है।

अदितेऽनुमन्यस्व (आदिति) आधिदैवत में अदिति अर्थात प्राची का उषा। क्यों कि उषाएँ भी यज्ञ की प्रेरक हैं। अध्यात्म में अगर अखण्डनीय जीवात्मक शक्ति। यदि आत्मा का समर्थन न हो तो मनुष्य यज्ञ में प्रवृत्त नहीं हो सकता। अदिति यज्ञ की दिव्य नौका है।

अनुमतेऽनुमन्यस्व (अनुमति) आधिदैवत में यह पश्चिम सन्ध्या है। वहीं अध्यात्म में बुद्धि व मन अर्थात मनन एवं चिन्तनशीलता। इस प्रकार अनुकूल निश्चयात्मक बुद्धि विद्वानों में हमारे किए जाने वाले यज्ञ का अनुमोदन करें।

सरस्वतेऽनुमन्यस्व (सरस्वती) आधिदैवत में यह उत्तारायण की सूर्यप्रभा है जो अपने चरित्र एंव गुणों केक कारण यज्ञ की प्रेरक है। वहीं दूसरी ओर अध्यात्म में वाणी जिसके द्वारा मन्त्रोच्चारण होता है। इस प्रकार सरस्वती अर्थात वाणी द्वारा यज्ञ का अनुमोदन अति आवश्यक है।

सविता :– आधिदैवत में जहाँ सविता सूर्य स्वरुप है और इसी सूर्य द्वारा ही सम्वत्सर रुपी यज्ञ संचालित होता है। अध्यात्म में सविता अर्थात प्रेरक परमेश्वर । तात्पर्य यह कि हे प्रभो! मुझे यज्ञ की प्रेरणा से प्रेरित करते रहो।

अतः तीनों आत्मा, मन, बुद्धि और वाणी को वह सवितारुप परमेश्वर ही यज्ञ समर्थन की शक्ति, सामर्थ्य व अनुमति प्रदान करने वाला है।

अन्तिम मन्त्र के अन्य शब्द उस परमपिता परमात्मा के ही विशेषण है। वह ही गन्धर्व अर्थात आत्मा रुपी गौ को धारण करने वाला है। वेदवाणी का धारक होने से उसका नाम गन्धर्व है– "गां वाचं धरयति इति गन्धर्वः वेदवाणी धारकः परमेश्वरः "। वह पवित्र वेदवाणी व पवित्र ज्ञान का आश्रय है।

केतपू :– केतः प्रज्ञानतम् (निघण्टु 3/9) अर्थात ज्ञान विज्ञान से बुद्धि व मन को पवित्र करने वाला वही परमेश्वर है।

केत नः पुनातु– ज्ञानं विज्ञानं पुनाति सः केतपूः ईश्वर – जो प्रज्ञा विशेष है वह केतपू परमेश्वर है।

वाचस्पति – वाचः पाता वा पालयिता वा–वाणी अथवा वेदवाणी का पालक है, स्वामी है वह वाचस्पति संज्ञक ईश्वर है। इस प्रकार चारों दिशाओं में जल सिञ्चन के सदृश मैं पवित्र भावनाओं का प्रचार प्रसार कर सकूँ। इस के लिए मुझे उत्तम ज्ञान, पवित्र आचरण और मधुरवाणी से सामर्थ्य युक्त कीजिए। अतः चारों देवता हमारे यज्ञ का बाह्य व आन्तरिक अनुमोदन करें। यही है, जल सिञ्चन की सार्थकता, एवम् स्वामी जी की विनियोगात्मक विलक्षणता।

गली मास्टर मूल चन्द वर्मा
फाजिलका–152123

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 11-12/6/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. चीका में श्रेष्ठ विद्यार्थियों का हुआ सम्मान

डी.ए.वी. सीनियर सैकेंडरी पब्लिक स्कूल चीका के प्रांगण में शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करने के लिए भव्य प्रोत्साहन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में बतौर मुख्यातिथि श्री एच.आर.गंधार मुख्य सलाहकार, डी.ए.वी.सी.एम.सी. नई दिल्ली ने विशेष रूप में शिरकत की। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष टेकन राज शर्मा डी.एस.पी.गुहला थे जिनके अतिक्ति डी.ए.वी. स्कूल चीका की संस्थापक श्रीमती सुदेश गंधार, श्री ए.एन. गोयल चेयरमैन एल.एम.सी., डॉ.रमेश लाल मैनेजर, श्रीमती सुमन निझावन, क्षेत्रीय निर्देशक आदि गणमान्य भी विशेष तौर पर शामिल हुए। समारोह का उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्यातिथि एच.आर.गंधार द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। इसके बाद बच्चों ने आवारा भंवरे व करेले की शादी, गौन डांस, राजथानी डांस, गिद्दा, भंगड़ा आदि प्रस्तुतियों द्वारा देश की संस्कृति को दर्शाते हुए अभिभाववकों को भी मुत्रमुग्ध कर दिया। समारोह को संबोधन करते हुए मुख्यातिथि एच.आर. गंधार ने शिक्षक वर्ग का आह्वान किया है वे बच्चों को अनुशासित वातावरण में नीतिगत एवं संस्कारगत शिक्षा प्रदान करें ताकि वे अच्छे नागरिक बनकर समाज के निर्माण में अपना यथासंभव योगदान दें। उन्होंने कहा कि दयानन्द एंग्लो वैदिक संस्थाएं स्वामी दयानंद के आदर्शों को आत्मसात करके शिक्षार्थियों में शिक्षा के साथ–साथ अध्यात्म और सेवा का संदेश भी दे रही है, जो वास्तव में आज के संदर्भ में बहुत बड़ी

जरूरत भी है। उन्होंने कहा कि शिक्षक स्वयं का शुद्ध आचरण बच्चों के समक्ष एक उदाहरण के रूप में रखते हुए उनका मार्ग दर्शन करें, उन्हें ऐसी शिक्षा प्रदान करें कि जिससे वे अपने विषय में पारंगत हाने के साथ–साथ बुनियादि जानकारी हासिल करने के लिए जिज्ञासु बने रहें। डी.ए.वी. स्कूल चीका की संस्थापिका श्रीमती सुदेश गंधार ने भी समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आज तकनीक युग में बच्चों में संस्कारों का अभाव होता जा रहा है। हमें बच्चों में संस्कारों की पूर्ति के लिए योगदान देना चाहिए ताकि स्वच्छ समाज का निर्माण किया जा सके। इस अवसर पर डॉ.ओ.पी. ग्रोवर, डॉ. हंसराज गुप्ता, स्वर्ण जिंदल, परमानंद गोयल, रविन्द्र कंसल, कुलदीप सिंह ढ़िल्लों मंच संचालक, निरुपमा गुलाटी, पूजा शर्मा, अभिभावक, शहर के गणमान्य व्यक्ति, समूह अध्यापक आदि उपस्थित थे।

डी.ए.वी. थर्मल कॉलोनी पानीपत में लगा आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर

आर्य युवा समाज हरियाणा के तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक थर्मल कॉलोनी पानीपत में 26 मई से 1 जनू तक आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक डॉ धर्मदवे विद्यार्थी जी पानीपत जोन ने की। शिविर का उद्घाटन नायब तहसीलदार श्री गुरुदेव सिंह जी द्वारा किया गया। शिविर में डी.ए.वी. थर्मल, डी.ए.वी. सफीदों, डी.ए.वी. असन्ध, डी.ए.वी. जीन्द, डी.ए.वी. टोहाना, डी.ए.वी. नरवाणा, डी.ए.वी. रतिया, डी.ए.वी. फतेहाबाद, डी.ए.वी. हुडडा पानीपत, डी.ए.वी. जाखल, डी.ए.वी निगधु व डी.ए.वी. नीलोखेड़ी के 250 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को शारीरिक शिक्षक के रूप में श्री विनादे कुमार जी, योगासन में श्री कर्णदेव जी, जूडो कराटे श्री राजेश जी, तैराकी श्री प्रवीण कुमार, यज्ञ श्री राजीव जी एवं घुड़स्वारी में कैप्टन सूरत सिंह जी ने प्रशिक्षण दिया। शिविर के दौरान हरियाणा संस्कृत एकेडमी की ओर से संस्कृत श्लाकोच्चारण प्रतियोगिता,

हरियाणा पंजाबी एकेडमी पंचकूला द्वारा पंजाबी कविता पाठ एवं पंजाबी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया

गया शिविर में भजन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

प्रतियोगिताओं में विजयी रहे बच्चों को पंजाबी एकेडमी के डायरेक्टर श्री सुखचेन सिंह भंडारी द्वारा नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सतपाल आर्य जी ने भी सभी बच्चों को अपना स्नेहाशीश प्रदान की तथा योगासन प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को मैडल देकर सम्मानित किया।

शिविर के समापन समारोह में श्री एस.के. शर्मा (निदेशक डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली) ने सभी बच्चों को अपना आशीर्वाद प्रदान कर शिविर में आए हुए सभी शिक्षकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि अतिरिक्त उपायुक्त श्री आर. एस. वर्मा ने बच्चों से शिविर में सीखी गई बातों को समाज में फैलाने का आह्वान किया। इस अवसर पर बच्चों ने हार्स शो द्वारा सबके मन को आनन्दित कर दिया।आर्य युवा समाज हरियाणा के प्रधान डॉ धर्मदेव विद्यार्थी ने आए हुए महमानों का धन्यवाद करते हुए आर्य युवा समाज की ओर से उन्हें सम्मानित किया।

मुम्बई में आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई ने ''आदर्श जीवन निर्माण शिविर'' का आयोजन आर्य समाज सान्ताक्रुज् में किया। यज्ञ के उपरान्त शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण प्रसिद्ध उद्योगपति एवं आर्यश्रेष्ठी श्री लद्धाभाई विश्राम पटेल, घाटकोपर के करकमलों से हुआ। इस शिविर के मुख्य शिक्षक श्री धर्मेन्द्र आर्य मुम्बई, श्री प्रशान्त आर्य अलीगढ़ एवं श्री हरेन्द्र आर्य मुजफरनगर थे। मुम्बई के सभी आर्य समाजों के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए बच्चें का उत्साहवर्धन किया। आदर्श जीवन निर्माण शिविर के अन्तर्ग शारीरिक, आत्मिक व बौद्धिक उन्नति के लिए अनेक विद्वानों को आमन्त्रित करके विभिन्न विषयों पर मार्ग दर्शन दिया गया तथा–उत्तम विद्यार्थी बनाना, स्मरणशक्ति बढ़ाना, व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास पैदा करना, तनाव से मुक्ति, योग प्राणायाम, ध्यान, आसन, स्वस्थ निरोग रहने के प्रभावी सूत्रों पर तथा सैद्धान्तिक, सारगर्भित एवं प्रभावोत्पादक प्रवचनों से शिविरार्थियों का लाभान्वित किया गया।

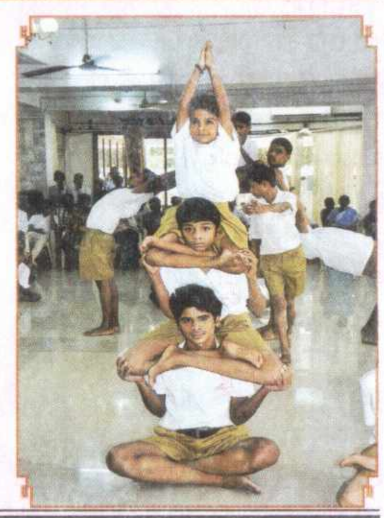

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**